मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● सलंग अंक १३६ ● अगस्त-२०१८

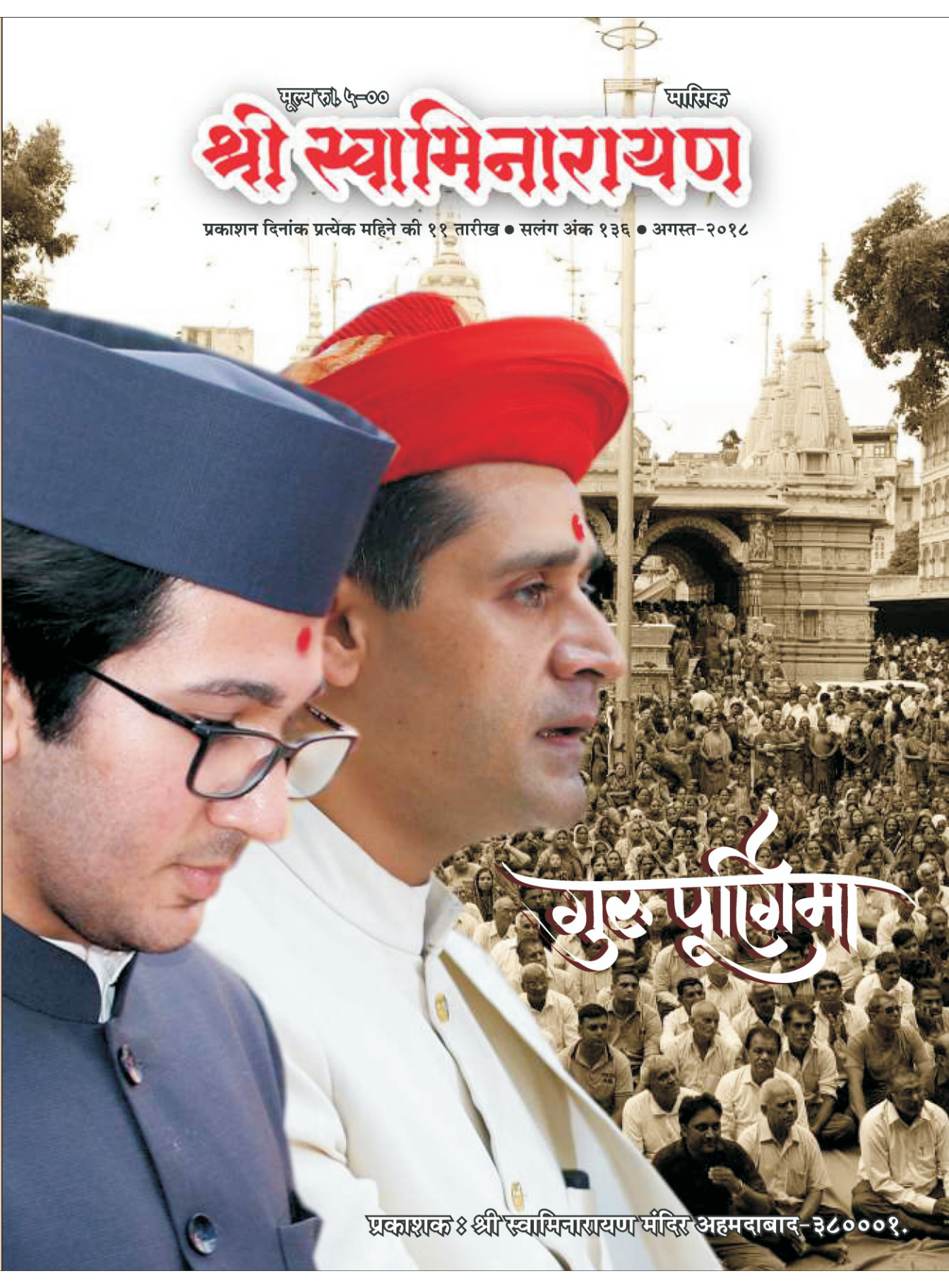

गुरु पूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) कलोल (पंचवटी) मंदिर में ठाकुरजी को केशर स्नान कराने के पश्चात आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(३) अंजलि मंदिर में ठाकुरजी का फूलों द्वारा भव्य दर्शन ।(४) बालासिनोर में मोतलपुर मंदिर के संतो द्वारा पूजन विधी का अवलोकन ।(५) न्यु राणीप मंदिर में रथयात्रा का प्रस्थान कराते हुए संत-हरिभक्त ।(६) कलोल (पंचवटी) मंदिर में प.पू. गादीवालाश्री की आज्ञा से समूह महापूजा का लाभ लेती हुई बहने ।(७) बद्रिनारायण मंदिर में आधुनिक नूतन धर्मशाला तथा सेवा करते कच्छ के हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १३६
अगस्त-२०१८

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४११५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	“शिवलिंग का सत्य	०५
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	०८
०५.	धर्मादा	११
०६.	देश - देश के हरिभक्त	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	१६
०९.	भक्ति सुधा	१८
१०.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

श्रीहरि के समय में पूरे भारत देश में छोटे-बडे ५०० रजवाडे शासन करते थे। भगवान श्रीहरि के साथ अनेक राजा भगवान के महत्व को समझकर इनसे अधिक प्रेम करते थे। इसमें विशेषकर गोंडल स्टेट, भावनगर स्टेट, वडोदरा गायकवाड स्टेट, जामनगर इत्यादि छोटे बडे स्टेट के राजा लोग भगवान श्री स्वामिनारायण के साथ धुमे तथा उन्होने श्रीहरि में अनेक अलौकिकता देखे थे। इस कारण से ये लोग अपने को भाग्यशाली मानते थे। इसमें अंग्रेज ने भी भारत में सत्ता प्राप्त की थी। उनके बड़े अफसर सर डनलोप, सरमाल्कम, निन्दे धर्म का पता ही नही था। लेकिन पूर्व के प्रारब्धसे श्री स्वामिनारायण को पहचान लिए थे। अन्यता अंग्रेज कभी कालुपुर मंदिर में ताँबे के पतरे पर लिखते ऐसा लेख लिखते क्या !

यदी परंपरा उनके द्वारा स्थापित आचार्य पद में हमे देखते है और दर्शन करने पर अपना मन और चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। सूर्य के उपर कोई कितनी भी धूल उडाये क्या सूर्य किसी को प्रकाश से वंचित रखा है। ऐसा हजारो लाखो वर्षो में क्या आपने सुना है यह तो ज्ञात नही है। बडे लोग कितनी भी विपरीत अवस्था आ जाये तो भी विचलित नही होते है। यह बडे लोगो की अच्छाई होती है। ये विशेषकर जान लेना चाहिए। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर असंख्य श्रीहरि के आश्रितो को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके जीवन को धन्य बनाकर धर्मवंशी के प्रति खुद की अनहद निष्ठा का दर्शन कराया। सर्वोपरी श्रीहरि आचार्यश्री हमेशा विराजमान रहते है। और सदैव रहेगे। ऐसा कॉल स्वयं श्रीजी महाराजने दिया है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१८)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयो का) बळोल (भाल - मूली देश) ठाकुरजी की आरती उतारने के अवसर पर आगमन।

५ लखनउ (यू.पी.) पूज्य श्री उमाकान्तजी तिवारी साहब (प.पू. महाराजश्री के ससुर) की अंतेयेष्ठि क्रिया में जाना।

२७ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में हजारो संत हरिभक्तोने गुरु का पूजन वेदोक्त विधिसे धाम-धूम से पूर्ण किये।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कच्छ (भुज) आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१८)

६ से १८ अमेरिका के पेन्सीलबेनिया में सत्संग युवा कैम्प स्वयं की अध्यक्षता में सम्पन्न किये। वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया और क्विलैण्ड पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर गूरु पूर्णिमा महोत्सव स्वयं की शुभ विचारो से धाम-धूम से मनाना।

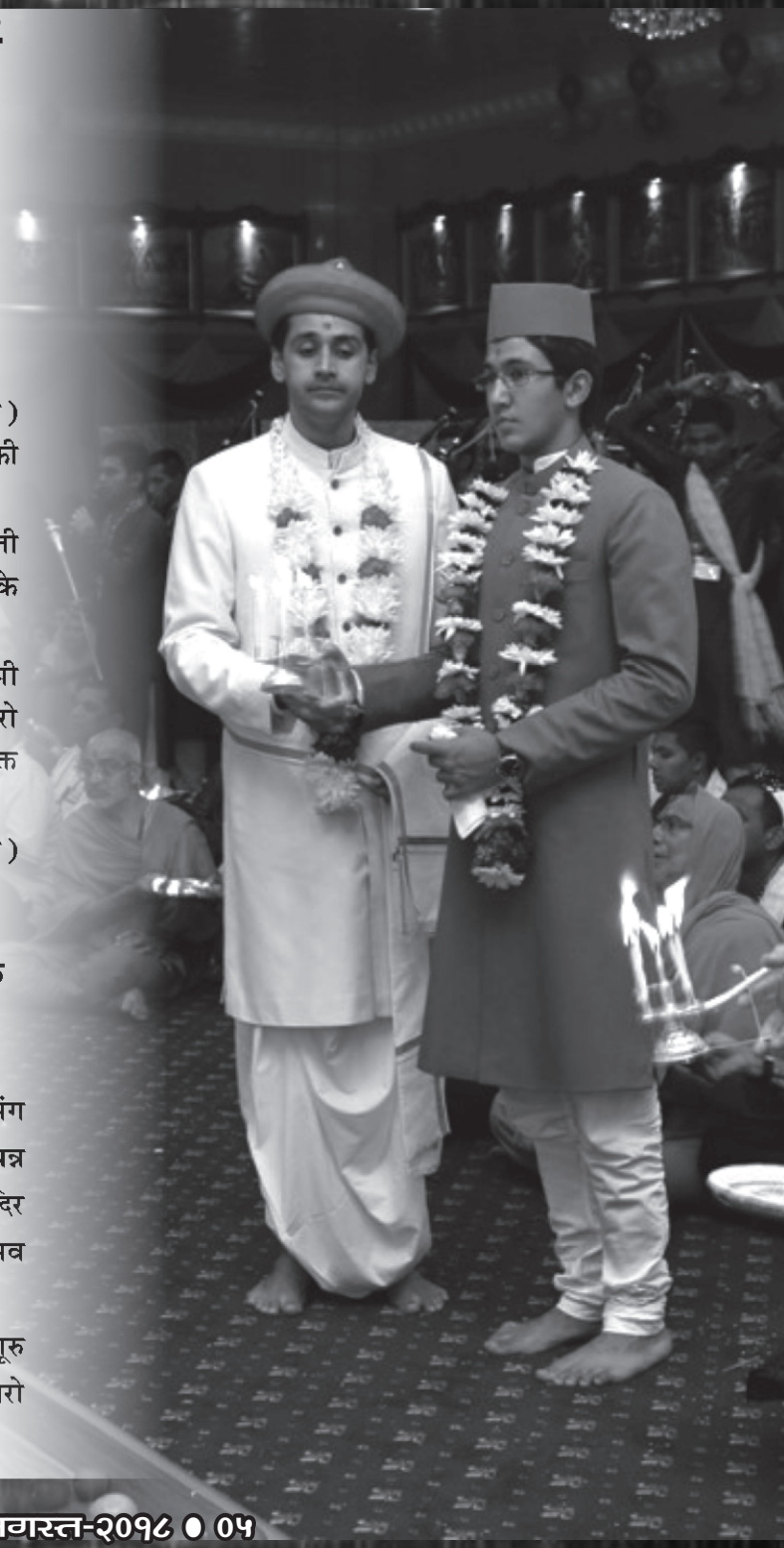

"शिवलिंग का सत्य

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीहरि शिक्षापत्री श्लोक नं. १४९ में लिखा हुआ है कि श्रावण महीने में श्री महादेव का पूजन बेल (बिल्व) के पत्ते से प्रेम पूर्वक करना चाहिए । अथवा दूसरे के पास से कराना चाहिए । श्री भोलेनाथ देवाधिदेव की श्रावण महीने में पूजा करना हमारे धर्मशास्त्र में पुराणो में वर्णित है । आर्यवर्त के अन्तर्गत में सभी हिदुओ का अनादि काल से भगवान श्री शिव के प्रति आस्था जुडी हुई है । उस में सम्प्रदाय, सिद्धान्त, उपासना, आदि हिन्दु परम्परा में अनंत भेद होते हुए भी भगवान सदाशिव रुद्रावतार के अनेक विचार धारा स्वीकारती है और आस्था के साथ पूजा भी करती है । उस में शिव की पहचान शिवलिंग है । इस शिवलिंग के रहस्य को शास्त्रोक्त, पुरुषोक्त विधिसे जानना अति आवश्यक है ।

सभी को ज्ञात है कि, भूतकाल में नौवी दशवी शताब्दी में मुस्लिम आर्यावर्त में आये । तत्पश्चात सोलहवी शताब्दी में अंग्रेज हिन्दूस्थान में आये तथा देश में अपनी सत्ता का प्रयोग किये । इसी से साथ मुस्लिमों और अंग्रेजो ने अपने धर्म का प्रचार-प्रसार अपने सत्ता के माध्यम से किये । वे उस समय अपने धर्म के प्रचार के साथ हिन्दु धर्म के आस्थापर युक्ति-प्रयुक्ति द्वारा खंडन करते तथा इस धर्म का उपहास भी करते थे । इसी तरह गैर हिन्दुओने शिवलिंग को गुप्तांग की संज्ञा देकर मजाक उडाते थे । उनकी सत्ता के डर से अपने हिन्दु भय से प्रलोभन एवम् स्वार्थ के कारण उनके साथ स्वर में स्वर मिलाकर लम्बे समय में स्वीकार करने लगे । समस्त हिन्दुओ के आस्था केन्द्र पर कल्पित भ्रामक मान्यता की सफलता पर गैर हिन्दु खुश होते तथा हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन में सफल होते थे ।

शिवलिंग की सत्यता को जानना यह हिन्दु धार्मिक व्यक्ति का पवित्र कर्तव्य है । इसके अलावा सफलता नही मिलेगी । तथा यह भगवान के प्रति अपराधभी होगा ।

शिवलिंग के विषय में लिंग शब्द संस्कृत भाषा में अर्थघटत करे तो लिंग अर्थात् "प्रतीक" निशान समस्त भाषाओ की जननी संस्कृत देववाणी की दृष्टिकोण से शिवलिंग का अर्थ शिव का प्रतीक, शिवका निशान, अर्थात् शिवस्वरुप, शिवपूर्ति, शिव आकार आदि प्रत्यक्ष अर्थ होता है । लिंग का अर्थ कभी भी किसी भी रुप में मूल भाष में गुप्तांग नहीं हो सकता है । जिस प्रकार से भाषा व्याकरण में तीन प्रकार है जैसे कि पुलिंग, स्त्री लिंग, नपुसंक के साथ लिंग का प्रयोग करते है । इन स्त्रीलिंग, पुलिंग, नपुंसुक लिंग ये मनुष्य के लिंग निर्धारण में किया गया है । यहाँ पर लिंग शब्द का अर्थ गुप्तांग नहीं होता है । ऐसे अनेक शब्दो का प्रयोग देखे तो लिंग का अर्थ मात्र केवल चिन्ह, प्रतीक, निशान आदि होते है ।

गैर हिन्दुओ के कल्पित प्रचार से हमारे हिन्दुओने शिवलिंग को गुप्तांग समझकर कई मत वाले स्त्रियों को शिवलिंग से दूर रखकर शिवपूजा के अधिकार से दूर रखा है । और समस्त स्त्री वर्ग शिव पूजा से वंचित रहती है । इस विषय पर कई विद्वानो ने खुलासा करके अंधश्रध्धा दूर करके स्त्रियों को पूजा का अधिकार शुरु कराये ।

शिवलिंग प्रागट्य की कथा बहुत रसप्रद है । स्कंद पुराण में लिखा है कि, शिव तत्व अनंत है । जिसका आदि, मध्य अंत नहि है इस लिए अनंत है । इसी प्रकार शिव तत्व पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है । शिव लिंग ब्रह्मांड की आकृति ब्रह्मांड का प्रतीक, ब्रह्मांड का चिन्ह-प्रतिकृति के रुप में शिव के साकार स्वरुप के ब्रह्मांड को शिव की प्रतिकृति लिंग पूजा की परम्परा शुरु हुई । इसी प्रकार हमारे ऋषि मुनियोने अनादिकाल से आत्मा की ज्योति प्रगट करने के लिए आत्म साक्षात्कार करने के लिए दीप ज्योति के

माध्यम से द्रष्टि एकाग्र करके ध्यानावस्था में बैठते थे । और दीप की एकाग्रता से ध्यान-धारण और समाधिप्राप्ति का प्रयास करते थे । उसे प्रयत्न में वायु प्रसार से दीपक की स्थिरता न होने के कारण ध्यान में कई अवरोधआते थे । उस समय के अनेक ऋषि-मुनियो ने एकाग्र दृष्टि करने के लिए दीपक के विकल्प में संशोधन करके उसमें ब्रह्मांड के शिवतत्व के व्याप्क तत्व की भावना लाकर, आदि अनादि स्वरुपशिव स्वरुप का साकार स्वरुप की स्थापना करके पूजा करने की परम्परा शुरु किये । उसमें साधको को शिव समाधिअवस्था प्राप्त किये । तब ज्योति स्वरुप दीपक के बदले में ब्रह्मांड आकार में शिवाकार शिव के प्रतीक, शिव के साकार स्वरुप शिवलिंग की पूजा प्रतिष्ठा होने लगी । साथ ही साथ शिवतत्व की आद्रय नित्य सेविका वेदिका थाल स्वरुप आद्रय शक्ति पार्वती की स्थापना करके पूजन किया जाता है । अर्थात् कि प्रकृति स्वरुप पार्वती की वेदिका स्वरुप और शिव स्वरुप पुरुष तत्व लिंग स्वरुप पूजन हेतु प्रतिष्ठा हुई । साथ ही साथ सेवक नन्दीश्वर, कश्यप आदि की प्रतिष्ठा हुई । संसार के उत्पाति के आधार पुरुष और प्रकृतिजो नित्य संयुक्त है । उसे वेदिका और लिंग स्वरुप आदि सूक्तो से स्तुति, प्रार्थना अर्चना की जाती है ।

तो लिंग शब्द का अर्थ यहाँ ऐसा नही होता है शरीर के एक अंग याडंग या अवयव कह सकते है । निर्गुण परमब्रह्म का साकार स्वरुप अर्थात् शिवलिंग ।

शिवतत्वका सम्पूर्ण ऐश्वर्य, शक्ति सहित साकार स्वरुप यहीं शिवलिंग स्वयं शिव शिवलिंग रुप में विराजमान है ।

दूसरे अर्थ में लिंग-लय-लिन ये दीनो शब्दो में सम्पूर्ण ब्रह्मांड के आवेश समावेश आवीर्भाव का बोधक है । जब कि लिंन का आदि- अनादि शूद्र स्वरुप लिंग शब्द बना । अर्थात् तीन शब्दो के सार से लिंग शब्द बना है ।

एकबार त्रेतायुग में शिव भक्त दैत्य नरेश, लंका पति रावण ने हिमालय पर कैलाश पर्वत पर बैठकर कठिन तपस्या किये, तब आशुतोष शिव प्रसन्न होकर वरदान दिये थे । इसके लिए रावण ने भोलेनाथ को मूर्ति स्वरुप लंका में विराजमान होने की प्रार्थना किये थे । तब शिवजी निज स्वरुप में लम्ब गोल पत्थर (शिवलिंग) देते हुए कहे थे । हे

रावण ! इस मेरी मूर्ति को जहाँ जमीन पर रख देगे वहीपर में स्थिर हो जाउगा । दशानन शिवलिंग लेकर लंका जाते समय बीच में लघुशंका की आवश्यकता हुई । इस कारण से विहार के एक इलाके में किसान को मूर्ति देकर शंका समाधान के लिए गये । किसान को अधिक वजन होने के कारण शिव को भूमि पर रख दिया । वही पर महादेव स्थिर हो गये । जो आज बारह ज्योर्तिलिंगो में वैजनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध है ।

इसी तरह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामने दक्षिण में समुद्र के किनारे सेतु बंधन से पहले अपने हाथो से स्फटिक शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा किये थे । जो आज रामेश्वर महादेव के नाम प्रसिद्ध है । उसकी प्राण प्रतिष्ठा के आचार्य पद पर पंडित श्री लंकापति रावण के द्वारा भगवान श्रीराम ने प्रतिष्ठा की विधिसम्पन्न कराये थे ।

भगवान शिव के मस्तक जटा में भी गंगाजी चंद्र देवका निवास है । भगवान श्री विष्णु के चरण से प्रगट हुई गंगाजी शिव के मस्तक पर धारण किये है । संसार में एक देव है जिसके सिर की पूजा की जाती है । कई ऋषियो के मतानुसार शिवलिंग शिवजी का शिर है । इसी कारण से कई मंदिरो में शिव के शिर का अलंकार किया जाता है । शिवजी अपने प्रिय भक्तो को मुक्ति स्वरुप में जटा में स्थान देते है । वही जीव शिव में लीन होता है । अर्थात् मुक्त लोग जिस जटा में लीन होते है उसे शिवलिंग कहते है ।

आदि-अनादि काल से आद्रय पूजनीय विष्णु और शिव प्रतिपादित है । तभी से विष्णु की पादूका (खडाऊ) और श्री शिव के सिर पूजे ताहे है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

हर्षदकोलोनी (बापूनगर) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव अवसर पर (ता. ४-३-१८) बहनो ने आप के लिए पहले नया मंदिर बना दिया इससे महाराजजी खुश हुए । इसके कारण थोडे ही दिन में भाईयो ने भी नया मंदिर बनाकर पूर्ण कर दिया । अत्यधिक आनन्द का अनुभव हुआ दोनो मंदिर एक समान ही है । कौन पहले बना इसका आभास नहीं कर सकते है । (दोनो मंदिरो का एक समान **Elevation** उचाई का मानचित्र उसी प्रकार अन्दर-बाहर की समान डिजाईन) होने से ऐसा लगता है । पूर्व विस्तार का **20x20** का यह सबसे प्राचीन ३३ वर्ष पहले का मंदिर था । जिस मंदिर में बैठकर भजन भक्ति हुई । आप लोगो को प्रसाद की वस्तुए भी मिली है । और साथ ही साथ इन संतो के कथा द्वारा किये गये सत्संग के कारण इस क्षेत्र में कई मंदिर तथा कई हरिभक्त हुए । आप सभी लोग इस मंदिर में ही नही सेवा दिये बल्कि उत्सव समैया में जहाँ आवश्यकता पडी सेवा दिये ही है । आप सभी लोग सौराष्ट्र से यहाँ आकर बसे तथा गुजरात में भी हरिभक्त आखर रहते है । लेकिन सारांश में यह कह सकते है हम सभी महाराजश्री के हे । स्वभाव और प्रकृति किसी की एक समान नही होती हे फिर भी मिलकर रहते है ये हम सब के लिये बड़ी बात है ।

हमारे निवास स्थान पर आप में से कभी कभाद मिलकर आते ही है । आप को ज्ञात हुआ होगा कि बाग में ५० जितने मोर दूसरे पक्षी, साँप, नेवला, बंदर, बिल्ली, कुत्ते और साथ में हम भी है । सभी मिलकर रहते है । आप कहेगे, बिल्ली और कुत्ते का मेल कहा होती है ? कुत्ते का बंदर के साथ सम्बन्ध। सर्प और नेवला से मेल कैसा ? लेकिन हमने साक्षात् देखा है कि दूधसे भरे तसले में बिल्ली दूधपी रही थी पीछे कुत्ता उसकी पूंछ चाट रहा था । (अती सूक्ष्म रुपविचार करतने पर यह निष्कर्ष आता है कि जैसे श्री नरनारायणदेव के निवास से बद्रीआश्रम की भूमि का समस्त्रो में ऐसा वर्णन मिलता है । उसी प्रकार धर्मकुल के निवास से पवित्र हुई श्री स्वामिनारायण बाग की यह भूमि में सहज बन जाता है । इसी प्रकार असारवा सहजानंद गुरुकुल - धर्मकुल के पुराने निवास स्थल पर आज भी कोई हनुमानजी का दर्शन करता है तो उस भूमि की दिव्यता की तरंग ज्ञात होती है । कहने का अर्थ यह है कि हम सभी लोग मिलकर रहते है तो हमारे मंदिर में भी आप में मिलजुल कर प्रेम से रहना चाहि ।

मंदिर में क्या होता है आप सोचिए । एक भगत महाराज के पास खडा हो या बैठा हो उसी समय उस भक्त का अप्रिय भगत बगल में आ जाये तो मूर्ति से चित्र हटकर गुस्से होने लगता है । यह मेरे पास क्यो आया ? क्या कर रहा है ? प्रणाम करते है ? माला फेरते है ? मंदिर में आये है तो ऐसा गुण भी रखे । महाराज के समय में जो बड़े मंदिर बने उसकी प्रतिष्ठा महाराज ने स्वयं प्रतिष्ठा किये थे । जिस में महाराज स्वयं प्रदक्षिणा किये थे । उस प्रदक्षिणा में आप देखे । बैठने के लिए पत्थर की बैठक बनाये थे । बैठक पर जो कोई भी बैठेगा । वह शायद संसार की थोडी बाते अवश्य करेगा साथ ही साथ भगवान के मंदिर में आकर बैठा है तो मंदिर के दिव्यवातावरण के प्रभाव से अवश्य प्रभावित होगा । अधिक नही तो २% तक उसका विचार अवश्य परिवर्तीत होगा । बच्चो को मंदिर में लाये होगे तो झूला और लपसनि इत्यादि चाहिए । समय के प्रमाण में हमें चलना है समय हमारे साथ नही चलता है । इसी कथा मंडप में आप देखे । आज से १०-१२ वर्ष पहले आप सभी नीचे बैठकर कथा सुनते थे न ? आज आप कुर्सी-सोफा पर बैटे है । किस लिये परिवर्तन करना पडा या समय की माँग अनुसार गाँव के लोग जो परिश्रम करते थे, वे कार्य आप नही कर सकरते है । बाल्यावस्था में जो बच्चा मंदिर में आकर खेला होगा । वह भविष्य में **Migrate** (स्लान्तरण) होकर कही पर भी

जायेगा । वहाँ बड़ा होकर याद करेगा कि मैने अमुक मंदिर जब छोटे थे तब वहाँ पर खेले थे । उसमें अपनेपन की भावना होती है । आप को विश्वास होगा कि इस कालुपुर मंदिर के प्रांगण में काफी लोग खेले है । मैं अपनी बात करु तो मैं नारायणघाट मंदिर के प्रागण में क्रिकेट खेला हूँ।

(स्टेज के उपर एक पतली प्लास्टिक की थैली महाराजश्री के बगल में पवन के कारण आ गयी और हवा के दबाव के कारण शायद आवाज कर रहा था । उसको महाराजश्री हाथ में लेकर दिखाते हुए कहते है। महाराजश्री की आज्ञा से ही ये वहाँ पर आई है। कारण हम क्या बोलेगे उसकी तैयारी कही जाती नहीं है । लेकिन ऐसे माध्यम प्राप्ति के बाद बोलना आवश्यक हो जाता है । महाराजने शिक्षापत्री में हमें स्वच्छता का आदेश दिये है। स्वच्छता केवल मंदिर में ही नही, अपने घर, कार्यालय इत्यादि जगहो पर आवश्यकतानुसार डस्टबिन (कचरा पेटी) रखनी चाहिए । कोने अतरे में ऐसा क्यो । अधिक डस्टबिन रखिये । और दूसरे यजमान मिलेगे । लेकिन कोई डस्टबीन का यजमान बने तो हमे अधिक खुशी होगी । आपको डस्टबिन न लाना हो तो हम डस्टबिन भेजे । बड़े-बड़े घरो में कभी-कभी डस्टबीन खोजना अति कठिन होता है । इसके अलावा हमें कुछ दूसरा उपदेश नहीं देना है । लेकिन डस्टबिन न डस्टबिन न भूले इस लिये इतना करना पडेगा। युरोप या आस्ट्रेलिया इत्यादि देशो से लोग यहाँ आते है । तब कहते है कि **India is very Dirty** (भारत अधिक गंदी जगह है) सड़क के उपर गाय, कुत्ते और गंदगी देखकर हमें कहना पडता है कि हम लोग मिलजुल कर रहते है। लेकिन शिक्षापत्री में स्वच्छता की आज्ञा दिये है उसका पालन करना चाहिए।

कई लोग कहते है कि मंदिर इतने क्यो ? हम कहते है मोल इतनी क्यो ? पहले एक गाँव में किराणा की दुकान होती थी तो भी काम चलता है ? समय बदला, मालकी अवश्यकता के कारण मोल बना होगा। इसी तरह वर्तमान समय में संस्कार के लिए मंदिरो की आवश्यकता है। आपको जानकर गर्व होगा दूसरे को बता सकते है इस लिए अवगत करा रहा हूँ कि नरनारायणदेव के देश में औसत सत्तरह (१७) दिन में एक मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होती है । आप के मंदिर की तो पुनः प्रतिष्ठा हुई है । लेकिन जिस गाँव में सत्संग नहीं होता था, सम्प्रदाय की आश्रित लडकियो की शादी दूसरे गाँव में गई है तो उस गाँव में उन लडकियो के कारण मंदिर बने है । और सत्संग होता है। मैं खुला आमंत्रण देता हूँ कि जिस गाँव में २-४ हरिभक्त भी होगे और हमें आकर मंदिर के लिए बात करगेगे तो जमीन सम्पादन कर देगे । शर्त इतनी होगी कि मंदिर नरनारायणदेव के नाम से दस्तावजे होना चाहिए।

ये दासभाई म्यूजियम में अच्छी सेवा देते है । म्यूजियम के महंत कोठारी या भंडारी जो कुछ भी समझे वे सभी प्रकार की सेवा आती है। लेकिन आज देखे लोगो के पास स्वयं के लिए समय नही है । उसका कारण मोबाइल और वोटसअप इसी प्रकार टी.पी. के ४०० चैनेल मनुष्य का समय नष्ट कर देता है। इस समय में मदिर या म्यूजियम के लिए समय देना सेवा करना ये धन्यवाद के पात्र है। मीडिया की बात करे तो, मिडिया द्वारा अच्छी वस्तु तथा रचनात्मक कार्य कम दिखाते है इस कारण से प्रेस वा समय देते है । पहचान वाले को ही सकारात्मक विचारो को रखने का आमंत्रण देता हूँ। जिससे मानव में सकारात्मक विचार आये। और अच्छे कार्य के लिये प्रेरणा प्रदान करे।

सापावाडा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव अवसर (ता. ८-२-१८) : अपने समप्रदाय का एक प्राचीन इतिहास है । बहुत प्रसिद्ध बात है कि महाराजने सभा में एक पायसा में दो पैर डाल दिये । इस दृश्य को देखकर आधे लोग सभा से निकलकर घर चले गये । लोग इन्हे भगवान कहते है । ऐसे क्या भगवान होते है ? जब कि यहाँ परसेवा नहीं है। यहाँ पर तो आधे लोग भोजन स्थल की तरफ चले गये । बात सत्य है। सभा में १२ बजे तक बैठना कष्टदायक लगता है । सिलिये कहते है कि १२ बजे के बाद बोलना तो ब्रह्म हत्या जैसा है।

आप के तप एवम् योगदान से मंदिर का स्वप्न आज पूरा हुआ है । बड़े लोगो ने जो सत्संग के बीज डाले थे वे आज फलीभूत हो रहे है। सात दिन से आप लड्डू खा रहे है। अब आठ दिन के बाद लालोडा का उत्सव प्रारम्भ होगा । आप को चौदह दिन लाडवा खाना पडेगा । डायटिंग करियेगा। हम सभी भाग्यशाली है हम लोग वृत नही है चार बार बोजन करते है। नही तो संसारें आप देखे भगवान की प्राप्ति के लिये लोग भूखा मार देते है। आप तप करी, से करो। चन्द्रायण करिये, सोमवार करिये तथा तपस्या करिये, मंगलवार करिये, बुधवार करिये..... हमें कुछ कहा गया है ? चार बढत खाकर घर बैठे अक्षरवासी मिले है ।यदि हम लोग अपनी भाग्य देख सकते होते तो सत्य में कहे हम सभी का एक बार भी भोजन पूरा नही मिलता । लेकिन हम सभी को सर्वोपरि भगवान मिले है इस लिये आनन्द करते है। जो भी कुछ है भगवान की कृपा से है। सापावाडा हो या लालोडा

हमारे पूर्वजो ने देवो को पूजा कर रखा है। इस लिये हम लोग सुखी है। दोनो गाँव में सुन्दर पक्के मकान बने है ? आप लोग मेहनत अवश्य किये है। लेकिन परिश्रम ही काम में नही आता है। जब तक भगवान की कृपा न हो तब तक कोई कार्य नही होता है। ऐसा सुंदर मंदिर सापावाडाको मिला है। इसलिये मेरा आप लोगो से विशेष अनुरोधहै कि मंदिर दर्शन प्रतिष्ठित करिये। जितना मंदिर की सीढी धिसेगी उतना अपना स्वभाव बदलेगा और लाख चौरासी के चक्कर से मुक्ति मिलेगी। किसी का कभी क्या हो यह निश्चित नही है। इसलिये देव और भगवान को कभी भूलना नही चाहिए।

सभा में कई हरिभक्तो का नाम बोला गया। हरिभक्त कम है मैं ऐसा कह रहा हूँ जिसाक नाम नही बोला गया उसे उठाकर लाओ। मैं तो ले जाता। लोगो को छोडना हमारी परम्परा नही है। लेकिन उन लोगो की चापायी धीरे धीरे बाहर कर दी जाती है। यह देखकर दुख होता है। हमें महाराजने मानवता का पाठ सिखाये है। इस लिये परित्यक्त बच्चा जो कोई पाप नही किया है इसकी जिम्मेदारी कोई नही उठाता है। तब हम उसके जिम्मदारी उठाते है। यह हमारा धर्म है। संसार में बहुत कुछ होता है। भगवान के मंदिर भी है और यह आवश्यक भी है। लेकिन इसके साथ मानवता न भूले इस लिये मानवात वाले मंदिर भी होने चाहिए। ऐसा बोलकर प.पू. महाराजश्रीने आँगन की बात कहे थे। उसके बारे में विशेष बोले थे। 'आँगन' मंदिर के बगल में ही क्यो ? जो नवजात शिशु है, २-४ दिन या सप्ताहभर का भी नहीं होता है लोग कचरें के पेटी में छोडकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते है। उन बालको को पालना कठिन बात है ? उनके देख-रेख के लिए अर्धरात्रि को कोई आवश्यकता हो या डॉक्टर की जरुरत हो खाना-पीने की आवश्यकता मंदिर के बगल में रहे तो पूरित हो सकती है। गाँव के बाहर अक्षम होता है। जिसे धन चाहिए, लोगो में वाह-वाह चाहिए। ऐसे लोग हाईवे पर होटल बनाते है। हम लोग भगावन को अच्छा लगे इसलिए अच्छा कार्य करते है। ये मेरे पास में खडे है (कालुपुर मंदिर के एकाउन्टेन्ट) यही चेक लिखते है। पूछिये ४० करोड का चेक कालुपुर मंदिर से इस प्रोजेक्ट के लिए दिये है। कही मांगने भी नही गये और जायेगे भी नहीं। आप जो गल्ले में एक रुपेय से लेकर करोडो रुपये डालते है उसका उपयोग एक जीव का अच्छा हो उसके लिये करेगे। इस कार्य के लिए मकरसंक्रांति को १० लाख रुपया तथा जेतलपुर की पदयात्रा के दिन ३० लाख आया है। उनकी पढाई के लिए स्वयं की शिक्षण संस्थाये है। देश-विदेश जाने पर भी हम लोग सहायता ही किये है। हमारा मानना है कि यही सच्ची माला है। पूजी की पेटी रखे है। पूजा करते है ये अच्छी बात है। लेकिन सच्ची माला फेरना तभी होगा जब अपना मन, बुद्धि और विचार भगवान द्वारा दिये गये संस्कार पर निर्भर करता है। यदि मानवात नही है तो सीधे मंदिर जाने से केवल चंप्पल और सीढी धिसना ही है। यह सत्य है। नही तो यह प्रोजेक्ट अपने को अच्छा भी न लगे। कारण इन छोटे बच्चे को सम्भालना कैसे ? छोटे बच्चे अपने पास १० मिनट रहते है। बाकी को २३ घंटा ५० मिनट अपने माता के पास रहते है। परन्तु गादीवालाने जिम्मेदारी ली है और उनके साथ सेवा कनरे वाली बहने है इसके पश्चात उनके लिए समय का योगदान सुलभ कम है। जागृति के लिए ये बात की गई है, बात व्यापक बने। मानवीय कार्य का दूसरे को सूचना भी मिले।

अपना विकास शीघ्रता से हो रहा है। उसकी जड में कही हम सच्चाई के रास्ते पर है। और भगवान अपने साथ है १०००% बात सच है। एक दूसरे के प्रेम से काम होता है। आप के प्रेम और लगाव के कारण दो दिन पहेल ज्योर्जिया गया। वीते दिन टांकिया में थे। आज यहाँ है कल धरमपुर में रहेगे। प्रेम नही होता तो गाँव में क्यो जाता ? इस प्रोजेक्ट में सांख्ययोगी बहने तथा बहुने अधिकने आयोजन सम्भालती है। हमे तो केवल माला फेरना है।

इस महोत्सव की सफलता में संतो का मार्गदर्शन आप लोगो का योगदान और परिश्रम - सभी मिलकर काम किये है। इस लिये विकास और प्रगति दिखाई दे रहा है, काम करना सरल नही होता है। और आप सोचिए कि आप के घर पर एक मेहमान आने वाले हो तो कितनी चिंता होती है। विशेष कर बहनो को चिंता होती है कि मेहमान का कहा बैठायेगे। उन्हें क्या भोजन देगे ? क्या अच्छा लगता होगा ? थाली-चम्मच सब मेचिंग करना पडता है। तो गाँव में कार्यक्रम रखना हो तो कितना ध्यान देना पडेगा। इसलिये बच्चे २५ फीट का हार लेकर आये इसलिये हमने मनाकर दिया क्योकि मेहनत आप ने किया है। आप हार पहनने के योग्य है। हम तो आकर चले जाते है। और अधिक मान हमे अच्छा नही लगता है। अमेरिका में मीटिंग थी। बड़े बड़े सम्मानित, बडे उम्र वाले ४० वर्ष से सत्संग में काम करने वाले सोफा में बैठे थे। वहाँ पर मैं नीचे बैठ गया। लोग बोले उपर बैठे हमने उत्तर गिया कोई टेन्सन नही है। उपर बैटे कोई उसे नीचे उतार दे। जो नीचे ही बैठा हो उसे कौन उतारेगा ? अंत में प.पू. महाराजश्री धन्यवाद और आशीर्वाद प्रदान किये।

धर्मादा

- जयंतिभाई सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

शिक्षापत्री यह स्वामिनारायण भगवान की वाडंगमय मूर्ति है । श्रीजी महाराज की परमवाणी के रुप में इसमें अभेद शक्ति है । जिसके कारण शिक्षापत्री का पालन दृढता पूर्वक करना चाहिए । ग.म.-६६ के वचनामृत में श्रीजी महाराज से नित्यानंद स्वामी प्रश्न पूछते है, कल्याण के कई साधन है । लेकिन इसमें कल्याण भगवान के सहारे में है । भगवान अत्यन्त शक्तिशाली है उनकी आज्ञा का पालन वृन्दावन एवम् समस्त देव गण भी करते है । काल - माया इत्यादि ये सभी ब्रह्मांड के कारण है । वे लोग भगवान के भय से भगवान की आज्ञा में रहते है । इसी लिये भक्त को भगवान के आज्ञा को दृढ करके भक्त बनाना अच्छे लक्षण है । जो भगवान के आसरे होते है उनका कल्याण करते है । साधन तो भगवान की प्रसन्नता के लिए होता है । इस लिये हमें कल्याण के व्यवहार करना चाहिए । शिक्षापत्री का पालन परम आदर के साथ करना चाहिए । शिक्षापत्री के श्लोक नं. १४७ प्रत्येक आश्रित मात्र धर्मादा देव मंदिर मे देने की आज्ञा किये है तो क्या हम इस आज्ञा का कड़ाई से पालन करते है क्या ? देश विभाग के लेखानुसार श्री नरनारायणदेव अर्थात् अहमदाबाद मंदिर के अन्तर्गत उसी प्रकार श्री लक्ष्मीनारायण देव अर्थात् वडताल मंदिर के अन्तर्गत धर्मादा देना चाहिए । आय का दसवाँ भाग निकाल कर श्री कृष्ण को अर्पण करके और जो गरीब हो उनको बीसवा भाग दे दे । यदि हम श्रीहरि के आश्रित कहलाते है तो उनके आदेशानुसार धर्मादा जिस देश में रहेत हो तो उस देश के देव मंदिर में जमा कर दे श्रीजी की कृपा प्राप्त करना चाहिए । महाराजकी स्पष्ट आज्ञा होने के बाद भी धर्मादा न निकालने वाले या अपूर्ण निकालने वाले पुर्न जन्म लेकर देव व्रत्य (धर्मादा) के कर्ज से मुक्त होने के बाद ही महाराज अपने धाम में लेते है । दान और धर्मादा में अधिक अन्तर है ।

दान तो स्वेच्छा से अपने शक्तिनुसार करना चाहिए । लेकिन दशवाँ भाग धर्मादा तो भगवान की स्पष्ट आज्ञानुसार करना चाहिए । अकसर प्रसंग में लोग दान और धर्मादा एक ही मानते हैं । आप की आमदनी का दशवाँ भाग तो भगवान का ही है । उसे मंदिर के कोठार में जमा करके रसीद ले लेनी चाहिए । भगवान के भाग का उपयोग अपनी इच्छानुसार देव मंदिरो में किसी समैया - या उत्सव में यजमान बनकर नहीं करना चाहिए । प्राय: यजमान लोग बड़ी बड़ी बाते करके अपनी बडाई करवाने के लिए, पद-प्रतिष्ठा हेतु देव धर्मादा का भाग इसमें उपयोग कर देते है । ये आज्ञा के विपरीत है । भगवान की आज्ञा का का पालन प्रत्येक आश्रित को करना चाहिए । संत भी कोई यजमान बनना चाहता है तो ऐसे भक्तो को भगवान का धर्मादा निकालकर ही यजमान पद की आज्ञा देना चाहिए । अर्थात् संत लोग भी महाराज की धर्मादा आज्ञा का कड़क पालन करे ऐसा भक्तो से आग्रह रहखे । इस में ही महाराज की खुशी है । कई बुद्धिशाली लोग भगवान के नाम की प्रतिज्ञा करके पुण्य के लिये धर्मादा मान्य मंदिर में न देकर अपने व्यक्तिगत संस्थाओ में लेकर महाराज की आज्ञा का सरेआम भोले भक्तो द्वारा उल्लंधन कराते है । यहाँ पर आप का द्रव्य सत्य कार्य में उपयोग किया जाता है । ऐसे असंख्य वादे करके महाराज के गुनहगार बन जाते है और बनाते भी है । जान बुझकर अनीति या अधर्म से प्राप्त आकर या घूस लेकर धन में से देव या धर्मादा में प्रयोग की गई राशि पुण्य नहीं देती है । बल्कि पाप कर्म को बढ़ाती है । शिक्षापत्री श्लोक १७ अनुसार धर्म करने का अर्थ चोरी का कर्म (पाप कर्म) नहीं करना है । ऐसी महाराज की स्पष्ट सूचना है ।

शिक्षापत्री श्लोक-२६ ''व्यवहारिक कार्य के लिए किसी से रिश्वत नही लेना चाहिए ।'' इस आज्ञा का अनादर करके घूस लेकर देव को दान धर्मादा या अन्य सतकर्म करने से कोई पुण्य नही मिलता है । बल्कि महाराज की स्पष्ट आज्ञा का अनादर करने का पाप लगता है । इसलिए श्रीजी महाराज के आश्रित मात्र को रिश्वत या शराब-माँस बेचकर या अन्य अधर्म - अनीति से पापकार्य करके कमाने को महाराज की आज्ञा का अनादर करने वाला कृत्य है . इससे अपने ईष्टदेव की सहायता सरेआम नष्ट होती है । अनंत कल्याण कोसो दूर हो जाता है साथ में आज्ञा अनादर से पाप कर्मो की सजा यातना भोगना पडता है । इस प्रकार महंगे मनुष्य शरीर को खोना पड़ता है । इस प्रकार अच्छे वख्त महाराज के आज्ञा का अक्षरश: पालन करके महाराज का आश्रय पक्का करके आत्यंतिक कल्याण पाते है यही महंगे मनुष्य के शरीर का कर्तव्य है ।

देश - देश के हरिभक्त

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

कोई भी वचनामृत ले तो, इसके प्रारम्भ में उस वचनामृत का समय बाद में श्रीजी महाराज की शोभा का वर्णन हो यह उसके पश्चात - स्वयं के मुखारविंद के आगे मुनि तथा देश-देश के हरिभक्त की भरी सभा हो - ऐसा आता है.

ये देश देश के हरिभक्त अर्थात कौन य तो इसके लिये स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित भक्तचिंतामणी ग्रन्थ अवश्य देखना पड़ेगा । गुजरात, सौराष्ट्र, काठियावाड तथा समस्त हिन्दु स्थान के अनेक प्रांत-प्रदेश को अलग - अलग देश रुप में आलेखित किये है। जैसे कि पंचाल देश, बालाक देश, सोरठ देश, हालार समेत कच्छ प्रदेश, सौभीर देश, कानम देश-भाल प्रदेश, दंढाव्य देश तथा निमाड, वुंदेलखंड, खान देश, मारु देश वगैरह वगैरह।

इन अनेक देश प्रदेशो में रहने वाले हरिभक्तो मे क्या क्या गुण थे ? कैसी भक्ति करते ते ? कैसे सत्संग करते थे ?

स्वामीजीने प्रत्येक देश के हरिभक्तो के गुण गाये है । विना किसी अतिशयोक्ति के जो जैसे ते वैसा ही वर्णन किये हा।

भक्ति जेवी गुजरातमां, तेवी आज नथी त्रिभुवन रात्यदिवस अम पासळे, वळी उभार हे एक पगे मूर्ति न मेले मिटथी, वळी मटकुं न भरे ह्गे गातां गुण गोविंदना, वही जाय सर्वे जामनी काय नहि कीर्तन करतां, भाविक बहु नर भामिनी अति दुर्बल कळ न पाडे, फळ फुल खाई रहे ज्यारे अमे जम्यानुं कहीए त्यारे जम्या छीए एम कहे एक एकथी अधिक अंगे, रंग छे सत्संगनो एवा जनने जोईने, आनंद उमंगे अंगनो

उस समय सम्पूर्ण गुजरात में सत्संग का रंग कैसा था । उसका साक्षात वर्णन उपराळिखि पंक्ति यो में दिखाई देता है। एक एक से अधिक अंग थे सभी हरिभक्तो के कीर्तन करते कभी थकते नहीं थे । गोविंद का गुणगान करते करते कभी रात निकल जाती उन्हे पता नही चलता था। आपस में अंगो में ईर्ष्या भाव नही था। श्रद्धा सहित ईर्ष्या रहित ऐसी भक्ति रात-दिन करते रहते थे । इस लिए महाराज करते है कि ''ऐसे भक्त लोगो को देखकर हमारा अंग अंग खुशी से भर जाता है।''

एकबार श्रीहरि सोरठ देश में दस-बीस दिन का विचरण करके पिपलाणा आये थे। वहाँ से माणावदर, जालिया बादीया इत्यादि गाँव वाले भक्तलोगोक ो दर्शन का सुषदेत देते पुन: गढडे आ गये थे।

कई दिनो का विरह था। गढ़डावासी महाराज से ऐसा कहते है।

पछी पूछ्य जने लागी पाय केवा सत्संगी सोरठमांय
कहो कृपा करीने अमने, केवुं हेत तमने

श्रीहरि सोरठवासी भक्तजलोगो की प्रशंसा करते कहते है।

सोरठदेशना सत्संगी जेह, अति निर्मळ कोमळ तेह नहीं छळ कपट लगार, बहु विश्वासी छे नरनार घणुं नहि डहापण चतुराई, निश्चय प्रभुनो प्रवत प्राई जे दिना स्वामी मळ्या छे ते दिनां सर्वे संशय टळ्या छे निरुत्थान छे नरनेनारी, एक एकथी समजण्ये भारी.

अत्यधिक सरल स्वभाव, छल कपट से दूर, चतुराई की अवश्य कमी है लेकिन सहजानंद स्वामी महाप्रभु के प्रति निश्चय पर्वत के समय अडिग है। जिस दिन से उन्होने महाराज का दर्शन किया है उस दिन से मन के सभी संशय दूर हो गये है। नर हो या नारी सभी सभी अव्याधिक समझदार है।

भक्त शिरोमणि जीणाभाई के गांव ऐसे पंचायत के भक्त कैसे थे।

धन्य धन्य पंचाळाना जन, जेनां निरमळ उदार मन
प्रभु पधराव्या सारूं भवने, नियम राख्यांतां नरनारी जने

काफी दिनो तक प्रतिक्षा करने के बाद दीन दयाल महाप्रभु जब पंचाल आये और घर-घर भक्तो को दर्शन दिये।

बहु प्रेमेशु लागिया पाय हेते आव्या छे हैयां भराय
बोले गद् गद् गीरा वयणे, हाल्यां हेतनां आंसु नयणे

श्रीहरि को प्रत्यक्ष देखकर शरीर की याद भूल गये। श्रीहरिने ऐसी करुणा दृष्टिडाले कि जैसे मृत्यु पर अमृत वर्षा हो।

श्रीहरि की ऐसी करुणा से पूर्ण वृष्टि देखकर सभी भक्तलोग सचेत हो गये और श्रीहरि की प्रार्थना करने लगे।

कहे आज थयां कृतारथ, प्रभु आव्ये सर्या सर्वे अर्थ
आज धन्य घडी धन्य वार, तमे पधार्या प्राण-आधार
पुण्य अमारानो नहि पार, जाग्यां भाग्य अतीशे अमार

बस महाराज ! आप के दर्शन से हमारे भाग्य का उदय हो गया।

भक्तचिंतामणी महाकाव्य अर्थात् भगवान और भक्त दोनो का समान महिमागान।

वंदु हुं भक्त वाळकना जन विशवासी विवेक अचल प्रभुनो आसरो, वळी व्रही न मुके टेक
सुंदर भक्त सौभीर देशे, जेनां अहि मन उदार
तन मन धन तुच्छ करी, हरि भजी उतर्या भवपार
दासवुं दास दंढाव्यनां भक्त अति घणां भाविक.
मोटां भक्त मारु देशनां अने मोटां जेनां मन
संग कुसंगने ओळखी वळी थया हरिना जन.
थवुं जन चडोतरना जेनां उज्जवळ अंत:करण
तन मन दन अर्पण करी थयां स्वामी श्रीजीने चरण
वडा भक्त वाकळमां, अति महात्मी मन उदार
हरि हरिजन उपरे, जेना प्रेमनो नहि पार
सुंदर भक्त सुरतना, अति होंशिला हरजिन
स्वामी सेवामां समार्या जेणे तन मनने धन
नकी भक्त निमाडना जेनां अति आकारं अंग
करडां कटण वचन जेने शिश साटे सत्संग

श्रीहरि के साथ पाँच सौ परमहंस की मंडली सदा साथ रहती थी।

एकबार महाराजने सभी संत मंडल से पूछे कि "इसमें कौन सा व्रत कठिन और पूर्ण हो बताये।"

और तुरन्त सभी संत उठे और श्रीहरि के सामने हाथ जोडकर कहने लगे।

पछी संत उठ्य जोडी हाथ, जेम कहो तेम करीए नाथ
कहो तो मटकुं न भरीये मीटे, कहो तो अन्न न जमीये पेटे
कहो तो तजीये छादननो संग, रहीये हिममां उघाडे अंग
कहो तो पीवुं तजी दैये पाणी, रहीए मौन न बोलीये वाणी
कहो तो बेसीए आसन वाळी, नव जोये आ देह संभाळी
एम हिंमत छे मन मांय तमे कहो ते केम न थाय

मुनिलोगो की ऐसी बात जानकर महाराज अति खुश होकर इन सभी संतो को "साधु शूर" कहकर विभूषित किये।

देश-देश के हरि भक्त कैसे थे ? उनके मन में क्या था ? कैसा सत्संग करते थे ? श्रीहरि कां दर्शन न मिलने पर व्याकुल हो जाते थे।

शुद्ध निर्मल चित्त से भक्तचिंतामणि ग्रन्थ का पाठ करे तो देस देश के हरिभक्त की महीमा मन को खुश कर देती है ऐसी मधुरतावाला है।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
magazine@swaminarayan.in

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

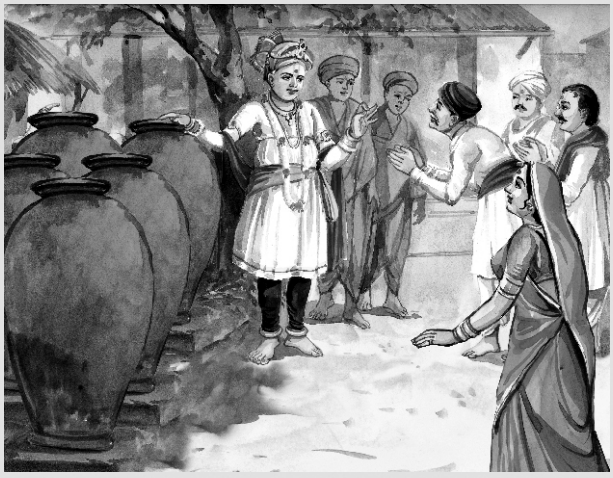

डांगरवा के अक्षयपात्र कोठी का टुकडा

दंढाव्य प्रदेश अर्थात् उत्तर गुजरात में डांगरवा नामक एक गाँव है। इस गाँव में एक वेणीदास पटेल नाम के किसान रहते थे। वेणीदास के पास जतनबा नाम की एक पुत्री थी।

जतनबा गोपियो की तरह प्रेमालु थी। इस लिए श्रीजी महाराज से बोली आप मेरे घर आये और संतो-पार्षदो को उत्पधिक दूध-घी और दहीं खिलायेगे।

श्रीजी महाराज जतनबा के भाव को समझ कर उनके घर आये। साधु-पार्षदो को पंक्ति में बैठाकर दूध, घी दहीं जो कुछ भी था लगातार परोसने लगी। गुड, भात घी भी खिलायी। कोई मना करे तो जबरन और दे देती थी। अन्ततः प्रभु स्वामी पात्र खाली कर दिये और चिल्लाये, जनतबा कही चली गयी ? देख लो, धी कम हुआ, दूधकम हुआ। आप कह रही थी नहीं कम होगा। इतने में जनतबा एक तंसला में (पात्र) शक्कर ईलायची युक्त दूधलाई और पीने का आग्रह की आप पी ले। कृष्णावतार की याद ताजा कर रहे हो ऐसे महाराज दोनो हाथो से तसला पकडकर मुँह पर लगा लिये। श्रीजी महाराज इस प्रकार कई दिन जतनबा के घर रुककर उनके भाव का आदर किये।

एक दिन वेणीदास पटेलने जतनबा से बोले, कि बेटा श्रीजी महाराज जाये तो जाने देना, रोकना नही, क्योकि घर में बुवाई जितना ही अनाज शेष रह गया है।

श्रीजी महाराज बोले चलिए आपके ओरडा की (डेहरी) कोठियो को देखते है। महाराज वेणीदास और जतनबा को साथ में लेकर ओर्डा में गये और सोटी डालकर बोले ये तो भरा है। यह भी भरी है, बार-बार सभी कोठियो में सोटी डाले थे। वेणीदास देखे की सभी कोठीया (डेहरी) अन्न से पूरी भरी थी।

इस प्रसादी की कोठी में से एक कोठी का टुकडा म्यूजियम नं. ९ में रखा गया है।

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जुलाई-१८

रु।. ११,०००/- दक्षाबेन भीखालाल शेठ - हिंमतनगर - प्रे. महंत स्वामी स्वामिनारायणमंदिर, हिंमतनगर।

रु।. ५,०००/- मीनाबेन के. जोशी - बोपल

रु।. ५,०००/- नेहा कांतिलाल तथा शैली कांतिलाल (दहींसरा) हाल बोस्टन यु.के.

रु।. ५,०००/- कमलेशभाई हरगोविंददास शाह - उस्मानपुरा - अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जुलाई-१८

दि. ०१-०७-२०१८ कांतिलाल चुनिलाल ठक्कर।

दि. १४-०७-२०१८ जमनभाई कनजीभाई मालविया - अहमदाबाद

दि. १८-०७-२०१८ नितीनभाई हीरजीभाई वरसाणी - फ्लोरिडा - यु.एस.ए.

दि. २९-०७-२०१८ (प्रातः) भरतभाई कांतिलाल पटेल - कडी

(शायं) जयेशभाई माणेक - अडालज (ह. चिराग और भाविन)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

प्रसाद बाँटकर खाना चाहिए

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान कच्छ में निवास करने वाले अनंतजीवो के उद्धार के लिए गाँव-गाँव में विचरण किये थे । तरह-तरह की लीलाये किये थे । एक बार श्रीजी महाराज मांडवी आये थे । समुद्र के किनारे सभा करने बैठे थे । कोई भक्त आकर भगवान के चरणो में पेंडा रख दिया था । सभा प्रारम्भ थी । सभा में कोई उस दिव्य योगी को पहचान नही पाया था । सिर पर बड़ी जटा विशाल मस्तक बड़े नेत्र अलमस्त शरीर चाल भी अनोखी थी । पूरी सभा में ऐसा हुआ कि ये कौन योगी होगा ?

श्रीजी महाराज के पास आकर वंदन किये । इतने में श्रीजी महाराजने पेंडा के भंडार से मुठ्ठी भर करके योगी को पेंडा दिये । योगी अति प्रसन्न हुए । प्रभु के हाथ से पेंडा मिलने के कारण सभा में नृत्य करने लगे । और कहने लगे महाराज ! यह प्रसाद तो अद्‌भुद है । यह प्रसाद किस को मिलता है । राधाजी, रमाजी, सरस्वती व्रज गोपिका ब्रह्मा, योगियो, तपस्वियों इनको भी यह प्रसाद जल्दी से मिलता नही है । और प्रभु ! क्या बात कही । इस प्रसाद के लिये मुझे देवी की गाली सुनना पड़ा है।

ये योगी कोई दूसरे नही, साक्षात् शिवजी थे । यह तो विचार करने वाली बात है । क्या भोलेनाथ को भी गाली सुननी पडी ! है दूसरे की नही तो घर वाली की सुनी ही पड़े ।

बात ऐसी है कि भोलेनाथ एक बार वैकुंठ में गये थे । वैकुंठ में भगवान के सामने अन्नकूट रखा गया था । भोलेनाथ वहाँ आये इस लिये भगवानने उन्हें प्रसाद दिया । भोलेनाथ खुश हो गये । इतना खुश हो गये कि प्रसाद खा डाले । बाद में कैलाश वापस आये ।

अधिक खुश देखकर पार्वतीजीने पूछा, क्यो आज अधिक खुश है ? क्यो न हूँ । आज तो वैकुंठ में गया था । भगवानने स्वयं प्रसाद दिया इस लिये खुश हूँ । पार्वती पूछी, प्रसाद कहाँ है ? वो तो मैं खा गया । वैकुंठ के दरवाजे पर ही सारा प्रसाद खा गया ।

पार्वतीजी बोली मेरे लिए एक चुटकी भर भी नही लाये है । और पार्वतीजी क्रोधित हो गई । अब तो महादेव के बस में भी नही । देवी इतने गुस्से में आ गयी कि उन्होने भोलेनाथ को श्राप दे दिया । यह कथा श्रीकृष्ण जन्म खण्ड में है । भोले नाथ को पार्वतीजी ने श्राप दिया कि आज से अन्त तक इस पृथ्वी पर आप का प्रसाद कोई नही खायेगा । और जो कोई आप का प्रसाद ग्रहण करेगा अशुद्ध हो जायेगा ।

भोलेनाथ को ऐसा हुआ । यह तो बहुत कठिन बात है । मेरे भक्त मुझे प्रसाद न रखे यदि थाल आयेगी तो हमे ही खाली करना होगा । ये कैसा होगा क्या मालुम सभी थाल समान नही होगी । अब मेरा प्रसाद कोई नही खायेगा । देवी लेकिन कुछ नही । आप को ज्ञान क्यो नही रहा कि भगवान का प्रसाद घर लाना चाहिए । मेरी भूल हो गयी । अब दूबारा जायेगे तो अवश्य लायेगे .

कुछ भी हो जाये घर में तो समाधान करना ही पडता है । बाद में पार्वतीजीने समाधान किया । आप की मूर्ति जहाँ पर रहेगी उसका प्रसाद सभी ले सकते है । उन्हे दोष नही लगेगा लेकिन जहाँ पर आपका त्रिशूल, शिवलिंग हो वहाँ पर अर्पित किया प्रसाद कोई भी नही लेगा । तब से आज तक शिवलिंग पर अर्पित प्रसाद कोई नही भक्त ग्रहण करता है । अब हम मूल अवसरको देखते है । श्रीजी महाराज के पास से पेंडा लेकर भोलेनाथ वैसे ही कैलास ले गये ।

इस बात से सिखने जैसा यह है कि थोडा प्रसाद घर ले जाना चाहिए । यदि नही ले जाते है तो आप के उपर यदी धारा लागू होती है । जो कैलाश की धारा महादेव पर लगी थी । गृहस्थ का कर्तव्य है कि कोई घर से किसी कारण वश मंदिर नही आ सका हो तो उसके लिए थोड़ा प्रसाद अवश्य ले जाना चाहिए ।

जिससे सबका कल्याण होता है । प्रसाद के लिये तो कहावत है कि ''बॉटकर खाना वैकुंठजाना'' प्रसाद सभी को बॉटकर खाये और सबको खुशी देकर सुखी रहें ।

•

लोभ (लालच) पापकी जड़ है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भगवान की कृपा से हमारे पास द्रव्य हो, सम्पत्ति हो, ये अच्छी बात है । लेकिन धन और सम्पत्ति परोपकार के लिये यां स्वयं के लिये न उपयोग कर सके । ऐसा लालची स्वभाव खराब माना जाता है । सम्पत्ति की होना या तो प्रारब्धया तो ईश्वर की कृपा से होता है । लेकिन सम्पत्ति का सदुपयोग और दरपयोग प्रत्येक व्यक्ति के हाथ की बात है । यदि दान-पुण्य

में प्रयोग हो तो सदूपयोग है। अपने सुख हेतु प्रयोग करे तो भी चलता है। यदि ये भी न करे तो सम्पत्ति का नाश हो जाता है।

एक गाँव में धनीराम नाम के एक मनुष्य रहते हो। उसके पास अत्यधिक सम्पत्ति थी। फिर भी यह अधिक लालची था। लोभी भी ऐसा कि दान-पुण्य करना तो दूर स्वयं के लिये भी नहीं खर्च करता था। कही पर दो-पाँच रुपये खर्च करना पडे तो उसके उपर मानो बिजली टूट जाये। कभी घर में अच्छा भोजन बन जाये तो वह पत्नी को बोलते थे। ऐसे मँहगाई में इतना खर्च किया जाता है क्या ? खाये भी नहीं खिलाये भी नही। ऐसे लालची मनुष्य को कभी ऐसा धक्का मिल जाता है। कि बचे धन से अधिक खर्च करना पडता है।

इन धनीराम को एक बार नारियल पानी पीने की ईच्छा हुई। घरवालो की चिंता कहाँ ? वह अकेले बाजार में गये और नारिय लका भाव पूछे। व्यापारी ने कहा एक रुपया होता है। यह सस्ते का समय था धनीराम ने कहाँ अरे एक रुपया खर्च कई। नही-नही मैं तो जंगल में जाकर नारियल तोडकर पीयेगे। वह समुद्र के किनारे नारियल के जंगल में गया। वृक्ष कई थे लेकिन ऊंचे-ऊंचे थे। उस पर बड़े बड़े नारियल लटक रहे थे। धनीराम के मुँह में पानी आ गया। लेकिन धबराया कि वृक्ष तो अधिक लम्बे है। उस पर चढ़ना कैसे होगा। नारियल के वृक्ष पर विना अनुभव के चढ़ना जिन्दगी के साथ खिलवाड़ करने जैसा था। लेकिन एक रुपया बचाने के लिये हिम्मत करके वृक्ष पर चढने लगा।

जैसे - तैसे उपर आ गये। मात्र नारियल एक ही हाथ ही दूर था। इतने में समुद्री हवा चलने लगी। नारियल का वृक्ष हिलने लगा। धनीराम की श्वास एक दम थम गयी। जीवन खतरे में आने के कारण हृदय गति बढ गयी। आदत न होने के कारण हवा के सामने तकलीफ होने लगी। बच नही सकते इस कारण से अपने प्रिय ईश्वर की प्रार्थना करने लगे। ''मै कभी दान पुण्य नहीं किया हूँ लेकिन आज संकल्प करता हूँ। किसी तरह से नारियल के पेड से उतर गया तो एक हजार ब्राह्मणो को भोजन खिलाउगा।

चमत्कार ! भगवानने उसकी अरज सुन लिये। हवा बंधहो गयी। नारियल पीने का विचार छोडकर नीचे उतरने लगा। नीचे आते ही सोचने लगा ''महगाई कितनी बढ गई है यदि हजार ब्राह्मण खाने आयेगे तो घर बेचना पडेगा। इसलिये पाँच सौ को भोजन करायेगे। थोडा और नीचे उतरा तो सोचा पाँच सौ ब्राह्मणो को खिलाने की क्या आवश्यकता है ? पचास ब्राह्मण तो अधिक है ? सोचते-सोचते नीचे आया तो जमीन पर विचारने लगा। एक ब्राह्मण खिला देगे। अधिक हो गया। नारियल तो मिला नही अपितु कपड़ा भी फट गया। थोडी चोट लगी ये लाभ है। घर आकर पत्नी से बोले कि मेरी मानता है थोडी मिठाई बनाओ। अपने गोर महाराज को बुलाकर खिला देगा। हम दो और एक गोर महाराज को लेकर तीन लोगो के लिए बनाना। अधिक नहीं बनाना मैं दोपहर में वापस आऊँगा। बाहर जा रहा हूँ।

दोपहर ११-३० बजे रसोई बनाकर धनीराम की पत्नीने गोर महाराज को खाने के लिये बुलाई। गोर महाराज भोजन करने बैठ गये। तीन का भोजन अकेले खा गये। थोडी मिठाई बची थी वह भी अपने बच्चो के लिये लेकर चले गये। पाँच रुपया दक्षिणा लेकर आशीर्वाद देकर चल दिये। दोपहर में तीन बजे धनीराम घर आये। पुनः उनकी पत्नी रसोई बना रही थी। यह सब जान जाने के बाद धनीराम लकडी लेकर गोर महाराज के घर तरफ गये। और बोले गोर महाराज तीन लोगो का भोजन अकेले कर गये तथा पाँच रुपया भी ले गये। मैं रुपया वापस ले आऊ। गोर महाराज दूर से देखे कि धनीराम लकडी लेकर आ रहे थे। वह तुरंत उपाय सोच लिये। वह चारपाई मे बेहोश हो कर सो गये। गोराणी पलंग के पास बैठकर रोने लगी।

धनीराम को आते देखकर गोर महाराज का लड़का बोलने लगा कि हमारे पिताजी को घर पर बुलाकर क्या खिला दिये ? दोपहर से आकर बेहोश हो गये। वैद्य बोले है कि पेट में जहर गया है निकालने का दश रुपया होगा। आप दस रुपया दे नही तो पुलिस में शिकायत करने जाऊँगा।

यह स्थिति देखकर धनीराम धबरा गया। यदि हमारे उपर फरियाद होगी तो जेल और बेईज्जती होगी। दश रुपया देकर बालक से कहे जा वैद्य को बुलाकर जहर निकलवा दो। फरियाद नही करना। मैं जा रहा हूँ दूसरा कोई खर्चा होगा वह भी देगे। लेकिन शिकायत नही करना। ऐसा कहकर धनीराम वहाँ से चल दिये। बाद में गोर महाराज बैठ गये। सभी हँसने लगे और गोर महाराज कहने लगे ऐसे लालची को सीख देने के लिये ऐसा ही करना पडता है। ऐसे लालची को सीधेक रने के लिये गुरु बनना पडता है।

मित्रो ! समझ में आया न ? एक रुपया बचाने के चक्कर में भोजन, मिष्ठान, प्रन्द्रह रुपये का कपडा इतना अधिक हो गया। यदि एक रुपया देकर नारियल खरीदे होते तो कितनी राहत और सुख मिला होता। लेकिन ऐसे लालची लोग सुख-शांति नही प्राप्त करते है। और निर्लोभी मनुष्य को कोई कभी दुःख नही दे सकता है।

इससे हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान की शिक्षापत्री में, काम, क्रोध, लोभ आदि आन्तरिक शत्रुओ पर विजय हेतु बात किये है। इसमें तो लोभ (लालच) पाप की जड़ होती है।

भक्तिसुधा

BHAKTI-SUDHA

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "हमें सच्चा सुख क्यो नहीं मिलता ? अपना लक्ष्य छूट जाता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

तो अपना लक्ष्य क्या है ? मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ? तो कृष्ण परमात्मा ने गीता में कहे है न कि,

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः । अर्थात् इस शरीर में स्थित सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है । इस लिये हम लोग परमात्मा के अंश है । तो जीव का सच्चा घर जगत नही है । परमात्मा की शरण में है । भगवान है और माया है और बीच में जीव है । हमारे पास मात्र दो ही विकल्प है । भगवान की शरणागति अथवा माया को धारण कर लेना है । किस तरफ जाना है यह हमें निर्धारित करना है । यह बात तो सिद्ध है कि एक म्यान में दो तलवार नही रख सकते है । या तो जीवन में भगवान को रखिये या तो माया को स्वीकारिये । स्वाभाविक है जहाँ पर प्रकाश होता है वहाँ पर अंधेरा का अभाव होता है । जहाँ अंधेरा रहता है वहाँ पर दीपक जलाने से प्रकाश हो जाता है । अंधकार अपने आप चला जाता है । तो हमें निर्णय कर लेना चाहिए भगवान की जीवन में प्रधानता होने से माया की प्रधानता अपने आप कम हो जायेगी । अत्यधिक सरल है लेकिन हम लोग सोचने में समय गवाँ देती है समय पूरा हो जाता है । (अर्थात् जीवन समाप्त हो जाता है) क्या करना है पहले निश्चित करे , जीवन में अच्छे कार्य ही करो । किसी कार्य करने से पहले ईश्वर के बारे में अवश्य विचार करे हम ईश्वर के अंश है । यह काम हमें शोभा देगा कि नही देगा विचार करे । कोई विशेष कार्यक्रम करना हो तो कभी किसी व्यक्ति को नही बुलाते है क्योंकि वहाँ पर हो सके कुल की समानता न हो, जीवन में कैसा कार्य करना है वह हमें निश्चित करना है । परमात्मा सभी को उसकी योग्यतानुसार शक्ति प्रदान किये है । परमात्मा के पास असीमित शक्ति है । हमारे शक्ति की सीमा है ।

तो इस शक्ति के माध्यम से हम इस जगत में जो कोई वस्तु प्राप्त करते है वह अपने पास रहती नही है । क्योकि ? हम लोग यहाँ के नही है यह जगत अपना नही है । यह अपना नही दूसरे का है । इसलिये दूसरे की वस्तु अपने पास नही रहती है । और हम लोग भी इस जगत में स्थायी रुप से नही रह सकते है । क्योकि इस संसार में कुछ स्थायी नहीं है । सभी कुछ परिवर्तन शील है । प्रत्येक क्षण में शरीर में परिवर्तन आता है । यदि स्थायी होता तो बदलाव नहीं होता लेकिन प्रतिक्षण बदलता है । इस का अर्थ अनित्य है जो नित्य है वह स्थायी है । अर्थात् शरीर परिवर्तनशील है । यदि स्थायी होता तो बदलाव नहीं आता । नित्य अपनी आत्मा है । यही अपना सच्चा स्वरुप है । इसलिये जो अपना नही उसे अपना मान लिए है । इसलिए सच्चा सुख नही मिलता और हमें कष्ट होता है । परमात्मा और आत्मा अविनाशी है । इस लिये समान-समय को अच्छे लगते है ? तो उनसे जुडने के लिए शरीर और माया को जो अच्छा चाहिए इतना ही सोचना चाहिए मैं परमात्मा का अंश हूँ । मेरा सच्चा घर वहाँ है हमें वहीं पर ही जाना है ।

इस संसार की कोई वस्तु स्थायी नहीं है यह संसार अपना घर है ही नही फिर भी इस संसार में भटकते है क्या कारण है ?

कोई भी कार्य पूर्ण करने के लिए हम घर से निकले हो तथा रास्ते में कुछ अच्छा दिखाई दे तो उस तरफ चल देते है इस लिए आप रास्ता भूल जाते है । खो जाते है । सायं को जाने पर रात्रि में विश्राम करते है । जहाँ पर स्थान मिला वहाँ पर विश्राम कर लिया । तो प्रातः होने पर क्या होगा ? हम जिस जगह पर रात को रुक जाते है वही उस जगह पर पर अपना प्रातः काल होता है ।

उसी प्रकार भगवान ने जिस कार्य को पूर्ण करने के लिए इस संसार में भेजे है, हमें किस मार्ग पर चलना है यह बिना सोचे संसार की वस्तुओं में लोभ, मोह, माया या आसक्ति में फँस जाते है और रात हो जाती है । अर्थात् मृत्यु हो

जाती है । अर्थात् हम जगत की वासना में इतना अधिक प्रभावित हो जाते है । और लक्ष्य भूल कर दूर चले जाते है । अर्थात् दूसरे योनि में जन्म लेते है । कभी मानव, कभी पशु का, कभी जलचर, नभचर योनि में जन्म लेते है । इस प्रकार अपना लक्ष्य चूक जाता है । इस लिए भटकते है । नही तो अधिक सरल है । हम ऐसा विचार करें हमें परमात्मा को प्राप्त करने के लिए संसार में आना पडा है । तो परमात्मा की प्राप्ति सुगम हो जायेगी । और हम सोचते है कि हम तो संसारी है । परमात्मा को प्राप्त करना कठिन है । छोटा बच्चा होता है । उसे माँ के गोद में बैठना कठिन होता है । हम परमात्मा के अंश है । भगवान हमारे माता-पिता है । उनसे मिलना कठिन नही है । इस प्रकार ध्यान से समझ ले तो कोई परेशानी नही कोई साधन नही करना पडता है । परमात्मा की शरणागति स्वीकार कर लेने से भगवान को मन में रखना चाहिए । विशेषकर यह याद रखे ये तो शरीर है यह भवसागर पार करने का साधन है ।

हमें नदी पार करना हो तो हमे तैरना आना चाहिए । यदि आप को तैरने नही आता है तो नाव की आवश्यकता होती है । साधन चाहिए ? तो ये सत्संगरुपी नाव है । उसमें बैठ जाईए सबके लिए स्थान है । कुछ न करे तो सत्संग में हाजिरी अवश्य दें । लक्ष्य निश्चित करके सत्संगरुपी नाव में बैठकर सभी के साथ पार कर जायेगे । आप सभी को खुब-खुब धन्यवाद आप के पास अन्य विकल्प होने के बाद भी सब छोडकर इतनी गर्मी में यहाँ तक श्री नरनारायणधेव के दरबार में कथा-वार्ता सुनने के लिए आये । अपने कल्याण हेतु । इसके बाद भी प्रगट कर अह्याधीन धन्यवाद । महाराज आप सभी को भक्ति करने की अधिक शक्ति दे ऐसी महाराज के चरणो में वंदना करता हूँ ।

●

अपेक्षा - ईच्छा

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

मनुष्य व्याधिऔर उपाधियो से पूर्ण घिरा होता है । इसके पश्चात् एक मात्र सुख-शांति का अफसोस होता है । ऐसी उसकी अपेक्षा होती है । किसी भी कार्य में ईच्छा-अपेक्षा हो मूल स्तम्भ रहता है । जैसी अपेक्षा वैसा ही कार्य होता है । सामान्य रुप से अपेक्षा अर्थात् अन्दर की ईच्छा । ईच्छा सुख रुपी भी है और दु:ख रुपी भी है । लेकिन सुख-दु:ख का आधार हमारी अपेक्षा पर आधारीत है ।

हमें प्राय: हो तरह की अपेक्षा होती है । उस में पहले अपने प्रति की अपेक्षा दूसरा दूसरे के प्रति अपेक्षा । ये अपेक्षाये एक दो, तीन, कोई सीमा नही होती है । व्यक्ति जन्म लेता है मृत्यु प्राप्त करता है तब तक उसके मन में लगातार एक या दो अपेक्षा किसी न किसी रुप में लगातार प्रगट होती है । जिसका कभी अन्त नही होता है । ''मनुष्य तो अनंत इच्छायो की पोटली है ।'' हमारे जीवन में तीन प्रकार की अपेक्षा होती है । (१) सहज स्वाभाविक अपेक्षा (२) ठरख सोती अपेक्षा (३) ओकर अपेक्षा (क्षमता से बाहर की अपेक्षा) ऐ तीन ही अपेक्षा ही हमे सुखी और दु:खी करती है ।

कोई भी कार्य करने पर तुरंत ही उसका परिणाम की अपेक्षा रहती है । यह सहज और स्वाभाविक अपेक्षा होती है । अपेक्षा के बिना कोई कार्य नही करता है । जैसे बच्चा छोटा होने पर उसकी देखभाल माता-पिता करते है । बिमार होने पर दवा देते है । पढा-लिखा कर बड़ा करते है । सत्संग और संस्कार देते है । बालक का सर्वागीण विकास हो ऐसा प्रयास करते रहते है । उसके पीछे माँ-बाप की स्वाभाविक अपेक्षा रहती है । मेरा लडका बड़ा होगा । पढ-लिखकर आगे बढेगा । धन-पद से सुखी रहेगा । वृद्धावस्था में सहारा देगा । इस बात का उदाहरण बनेगा । हमारा पालन पोषण करेगा । ये सभी माता-पिता की बच्चो के प्रति सहज अपेक्षा होती है । ये प्रत्येक माँ-बाप की अपेक्षा होती है । जिस कारण से बालक का पालन करते है । अपेक्षा की आशा से जीवन खर्च करके सेवा करते है ।

जैसे माता-पिता की अपेक्षा अपने बच्चे से होती है । उसी प्रकार आध्यामिक मार्ग में गुरु को शिष्यो के प्रति सहज स्वाभाविक अपेक्षा रहती है । गुरु के द्वारा किये गये सिद्धान्तो एवम् संकल्पो-आग्रहो अनुसार शिष्य का जीवन बनता है । भक्ति मार्ग से जुडे नियम धर्मो की सीमा में रहकर आदर्श भक्त जीवन बिताये । व्यवहार प्रवृत्ति करते हुए भी प्रभु भक्ति को कभी गौण न माने । ऐसी गुरु की शिय के प्रति सहज अपेक्षा होती है । शिष्यो का कर्तव्य बना रहता है ।

दूसरा स्वयं के जीवन में कही स्थिर अपेक्षा हो जाये तो यह स्थिरता दुख का मूल कारण बनता है । दूसरे को आप लागू करने के लिए दबाव डालता है उसे ठराव अपेक्षा कहते

है। हम जैसा चाहे ऐसा होना हर जगह निश्चित नही है। इस कारण से अपनी अपेक्षा पूर्ण न होने पर गुस्सा और होता है।

समाज में या सत्संग में ऐसा हो जाता है कि **"I am somthing'** मैं श्रैष्ठ हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ, मैं बड़ा हूँ। मैं कार्यकर्ता हूँ। प्रभु की ईच्छा से ही कोई पद या सत्ता मिलती है। प्रभु की ही ईच्छा से योग्यता, बुद्धि, कला, कौशल जो कुछ मिलता है वह सब अपना मान लेते है। इस कारण से अहम् आ जाता है। परिणाम स्वरुप स्वयं का अहम सुरक्षित लगता है। सभी सम्मान देते है। हार पहनाते है। आगे बैठाते है। सभी महत्वपूर्ण निर्णय पूछकर हाजिरी में लोग करे। ऐसी अपेक्षा हो जाती है। लेकिन यह सब स्थायी हो ऐसा नही हो सकता है। परिणाम स्वरुप लोग दुखी हो जाते है।

हरभम सुथार काला तालाब से ५० गाँव चलते चलते भुज आये। वे रामानंद के शिष्य थे। वे श्रीजी महाराज का दर्शन करने आये थे। वे अनेक अपेक्षा ले कर आये थे। जैसे की मैं भुज जाउगा और महाराज मुझे सभा में आगे बैठायेगे। हार पहनायेगे। मेरा नाम लेकर बुलायेगे। महाराज सन्मान करेगे। ऐसी प्रबल धारणा बनाकर उनका दर्शन करने आये थे।

हरभम सुथार सभा में आये। दंडवत करके श्रीजी महाराज को ''जय स्वामिनारायण'' कहे। लेकिन महाराज उनके सामने देखे तक नही। इससे उनकी अपेक्षा पूरी नही हुई। इस कारण से हरभम सुधार दुखी हो गये। हमेशा सभा में आगे बैठने वाले पीछे बैठ गये। जिसका दर्शन करने आये ते उसे मनुष्य मानकर दुखी-दुखी हो गये। इस मान्य अपेक्षा से दुखी होते है।

चंचल में चंचल प्राणी अर्थात् बंदर जिसे पकडना कठिन होता है। जंगल में मदारी लोग बंदर को पकडने के लिये एक विशेष प्रकार की युक्ति करते है। बंदर को मूँगफली सबसे अधिक प्रिय होता है। जिसके कारण बंदर का मात्र एक हाथ सीधे जा सके इस तरह का छोटे मुह वाला वर्तन बनाकर उसमें मूँगफली रख देते है। बाद में बंदर उस पात्र में दोनो हाथ डाल देता है। और भरी मुठ्ठी के साथ बाहर निकलना चाहता है। बर्तन का मुँह छोटा होने के कारण हाथ बाहर नही आ सकता। अन्ततः बंदर मदारी द्वारा पकड लिया जाता है। बदंर की स्वतंत्रन्ता छिन जाती है। वह मात्र मुठ्ठी भर मूँगफली छोड देता तो उसका कष्ट दूर हो जाये। लेकिन बंदर मूँगफली की लालच के कारण मुठ्ठी खोलाना नही है। अपने सम्मान स्वकीटी स्वसुख की अपेक्षा पूर्ण करने में दुखी हो जाता है। जो इस तरह की मुठ्ठी छोड दे तो सुखी हो जाता है। इसलिए सत्संग में कोई अपेक्षा नही रखे। जैसे पराजय, सम्मान, प्रसाद-बोल-चाल, बखान, सिर पर हाथ रखे तो अच्छा ऐसी भी अपेक्षा भी न रखे। यदि अपेक्षा न रखे तो। यदि अपेक्षा पूर्ण न होने पर उपेक्षा पैदा होती है। महाराज और धर्मकुल - आचार्य महाराजश्री तो अंतर्यामी है वे सब देखते है और जानते है। उनके पास से स्थिर अपेक्षा कैसी। इस लिये अपेक्षा की माँग नही रखना चाहिए।

तीसरे अपेक्षा ओवर जो सर्वाधिक अपेक्षा है। जो दुःख का कारण बनती है। कारण अपनी क्षमता कम हो लेकिन अपेक्षा बडी हो तो दुख पैदा होता है। कुछ लोग रातो-रात करोडपति बनना चाहते है। १२ वी पास व्यक्ति बैंक का मैनेजर बनने की अपेक्षा रखे। विद्यालय का चरपासी आचार्य बनने की अपेक्षा रखे। गाँव का सरपंच देश का प्रधान मंत्री बनने की अपेक्षा रखे, सडक साफ करने वाला झाडू लगाने वाला मेयर बनने की अपेक्षा रखे। ये ओवर अपेक्षा है। इसके लिये कितना प्रयास करे क्या सम्भव है? एक रुपेय का गुब्बारा एक वित्ता फूल सकता है। अपनी क्षमता देखकर अपेक्षा रखनी चाहिए। इसलिये कहता हूँ कि ''पैर उतना ही लम्बा करना चाहिए जितनी चादर हो।'' अर्थात् पैर चद्दर की तुलना में लम्बा करना चाहिए। नही तो मच्छर काटेगा। अधिक अपेक्षा दुखी करता है।

मात्र एक महाराज अपने स्थान पर विराजमान आचार्य महाराजश्री और उनकी आज्ञा का पालन करने से संत अन्दर से खुश होते है। इसके लिए मात्र महाराजश्री की मूर्ति की अपेक्षा रखना चाहिए। सद्. गुणातीतानंद स्वामीने तीसरे प्रकरण में २४ वीं बात में लिखे है कि जो विषय को दे वह भगवान नही और विषय माँगे वह भक्त नहीं है। ''इस लिये जिसे भगवत निष्ठ होना हो उसे भगवान के मूर्ति सिवाय कुछ ईच्छा नहीं रखना चाहिए।'' महाराज की मूर्ति में सुख ही सुख है। इस लिये समस्त ईच्छा अपेक्षा को छोडकर एक मात्र महाराज की मूर्ति सुख की अपेक्षा रखना चाहिए।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में गुरु पूर्णिमा का महोत्सव दबदबा पूर्वक मनाया गया

अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा ता. २७-७-२०१८ दिन शुक्रवार सम्पदाय के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में गुरु पूर्णिमा महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। श्रीहरि के तीन अपर स्वरुप ऐसे परम पूज्य बड़े महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का धामो-धाम से आये पूज्यनीय संत-महंत और हजारो हरिभक्तो द्वारा संगीत की सुमधुर स्वर के साथ भावपूर्वक स्वागत और समैया कियाग या था। इसके बाद परमकृपालु भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायण आदि देवो का शृंगार आरती की गई। तत्पश्चात प्रसादी के सभा मंडप में सुंदर देदिप्यमान सजी पीठस्थान पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री विराजमान हुए। विद्वान विप्रो द्वारा स्वस्ती वाचन पूजन-अर्चन के बाद गुरु पूर्णिमा के गुरु पूजन के यजमान प.भ. नारायणभाई, ईश्वरभाई पटेल और उनके पुत्र प.भ. प्रवीणभाई इत्यादिने धर्मकुल का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे तथा आशीर्वाद प्राप्त किये। अग्रगण्य महंत, संत श्री टेम्पल बोर्ड के सदस्य श्री मंदिर की कार्यकारीणी, भूतपूर्व सदस्यश्री और श्रेष्ठ हरिभक्तो का समूह आरती किये। और अलौकिक लाभ लिये।

प्रसंगोचित सभा में पूजनीय संतो से सम्प्रदाय के मूर्धन्य संस्कृत के प्रकांड विद्वान पंडित कथाकार पूज्य शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी, कथाकार पू. महंत स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, अंजलि मंदिर के महंत स.गु. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी और कालुपुर मंदिर के विद्वान वयोवृद्ध महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संतोने समप्रदाय के श्रीहरि के स्थान पर विराजमान स्वंय श्रीजी महाराज के द्वारा स्थापित हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ही हमारे धर्मगुरु है। उनकी आज्ञा-अनुमति में ही मोक्ष और कल्याण रहा है। इस पर विशेष ध्यान दे। ऐसा कहकर उद्‌बोधन किये थे।

इसके बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए बोले कि, परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का होकर रहने की सलाह दिये। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अनेक प्रसंगो के साथ गाँव के छोटे हरिभक्तो का सन्मान करके चातुर्मास में श्री नरनारायणदेव देश के गाँवो में कथा करने जाने वाले संतो का नाम अपने मुख से उच्चारण करके गाँव-गाँव में ऐसी प्रवृत्ति करने वाले संतो को प्रोत्साहित किये थे। प्रत्येक बात में देव की प्रधानता का वर्चस्व आशीर्वाद में बताये थे। सभा का सुंदर संचालन युवा शास्त्री स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) ने सम्भाला था। समुह आयोजन में कोठारी जे.के. स्वामी (मेम्बरश्री), हरिचरण स्वामी (कलोल), भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी, भक्ति स्वामी आदि आदि संत मंडल तथा उसी प्रकार समग्र श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने अधिक सुन्दर व्यवस्था किये थे।

(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

नीचे के महामंदिरो में नित्य दर्शन के लीये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपिया : www.chhapaiya.com
नारणघाट : www.narayanghat.com
प्रयाग : www.prayagmilan.org
ईडर : www.gopinathjiidar.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.swaminarayanmandirtorda.com
वडनगर : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
अयोध्या : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
नारणपुरा : www.sankalpmurti.org
धोलका : www.swaminarayanmandirdholka.co.in

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर ५७ वाँ पाटोत्सव - श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवलल्भदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से ऐतिहासिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का ५७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. भावसार चंपकलाल रुधनाथदास (वडनगर) परिवार के यजमान पद पर एवम् श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. स्वामी हरिप्रसाददासजी गुरु स्वामी भक्तिवल्लभदासजी तरफ से पूर्ण हुआ । कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा शा. अभिषेकप्रसाददासजी वक्ता पद पर संगीत के स्वर के साथ ता. ६-७-१८ से १०-७-१८ तक हुई । कथा पारायण की पूर्णाहुति अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी के हाथो पूर्ण हुई । इस अवसर पर हाथीजण, नारणघाट, मेहसाना, सिध्धपुर, टोरडा, विसनगर, प्रांतिज, बीलिया, आदि धामो से संत महंत आये थे । पाटोत्सव वैदिक विधिसे मंदिर के गोर शास्त्री जयेशभाई रतिलाल विधिवतपूर्ण किये । अंत में आभार विधिमंदिर के ट्रस्टी प.भ. मोदी नवीनभाई मणीलालने किया ।

श्रीजी महिला मंडल वडनगर द्वारा श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन हुआ था ।

(कोठारीश्री वडनगर मंदिर)

टोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में परम्परागत अषाढी तोल

मू.अ.मू.पूज्य स.गु. गोपालानंद स्वामी की प्रागट्य भूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा धाम में ता. २८-७-१८ के दिन संकल्प मूर्ति श्री गोपाल लालजी हरिकृष्ण महाराज और स.गु. गोपालानंद स्वामी के शुभ निश्रा में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अषाढी तोल की गयी ।

इस तोल में भगवान के वस्त्र में अगले दिन पाक की सभी वस्तुए तौल कर ठाकुरजी के समक्ष मिट्टी के घडें रखा जाता है । दूसरे दिन प्रात: सभी पाक की वस्तुए तौली जाती है । जिस में जो पाक अधिक हो जाये वह पाक अधिक होता है । और जो कम हो वह पाक (फसल) निष्फळ हो जाती है । यह पूज्य गोपालानंद स्वामी का एक चमत्कार ही है ।

यहाँ पर ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा हुई तब से अर्थात् ६५ वर्ष से यह परम्परा चालू है । यहाँ के किसान इसी आधार पर खेती करते है । आज ठाकुरजी के सामने महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी, मोहन भगत तथा गावँ के सभी भक्त उपस्थित थे । महंत स्वामी के कथनानुसार इस वर्ष वर्षा अच्छी होगी ।

लाल मिट्टी	- बाजरी के ६ कण अधिक
मूँग	- बाजरी के ३ कण कम
गेहूँ	- बाजरी के १२ कण अधिक
चणा	- बाजरी के १७ कण अधिक
अडद	- बाजरी के ३ कण कम
बाजरी	- बाजरी के १४ कण अधिक
कपास	- बाजरी के १७ कण अधिक
धान	- बाजरी के २१ कण अधिक
रसकस	- बराबर
काली मिट्टी	- बाजरी के ८ कण घट
मक्का	- बाजरी के १४ कण अधिक

(महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी - टोरडा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धाकडी रजत जयंती पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धाकडी (ता.

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

विरमगाम) का २५ वाँ पाटोत्सव-रजत जयंती पाटोत्सव जेठ सुद-१३ ता. २६-६-१८ के दिन जेतलपुर धआम के महंत स्वामी के.पी. स्वामी, शा. भक्ति स्वामी, ब्र. के.पी. स्वामी आदि संतोने ठाकुरजी का षोडशोपचार, अभिषेक, आरती, अन्नकूट आरती उतारे तथा कथा भजन कीर्तन किये थे। गाँव के हरिभक्तोने अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए।

(कोठारीश्री धाकडी)

सर्वावतारी श्रीहरि के सर्वोपरि छपैयाधाम को पर्यतन स्थल धोषित किया गया

यू.पी. के माननीय मुख्यमंत्री श्री श्री योगी आदित्यनाथजीने ता. १८ मई २०१८ को विशालजन सभा में हमारे सर्वोपरि छपैयाधाम को पर्यटक स्थल धोषित किये। जिसके दर्शन के लिए मा. श्री मुख्यमंत्री द्वारा स्वामिनारायण छपैया से लखनउ, लखनउ से स्वामिनारायण छपैया तक आने-जाने के लिए यु.पी. राज्य परिवहन निगम की बस सेवा शुरु किये है। ता. १२-६-१८ को लखनउ से स्वामिनारायण छपैया के लिए मुख्यमंत्रीजी स्वयं हरी झंडी दिखा कर बस को रवाना किये।

इस अवसर पर छपैया मंदिर के महंत स्वामी ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी, कोठारी ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, ब्र. स्वा. शांतदेवानंद गोंडा के सांसद कीर्तिवर्धनसिंह (राजा भैया) और मान.श्री प्रभात वर्माजी एडवोकेट आदि उपस्थित थे। इस पूरे कार्य को छपैया के महंत स्वामी और उनके शिष्य मंडल का अथक प्रयत्न तथा गोंडा के सांसद एवम् विद्यायकश्रीने अधिक सहयोग दिये।

समय : लखनऊ से प्रातः ६ बजे और दोपहर १-३० पर छपैया के लिए बस

छपैया से प्रातः ६ बजे और दोपहर १-३० पर लखनउ के लिए बस ये वाया अयोध्या होकर जायेगी।

(कोठारी स्वामी छपैया मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट के आगामी शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अखंड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर धाम के महंत पू. स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट में आगामी शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में ता. ५-६-१८ से ९-६-१८ के बीच श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन, जय यज्ञ (१०० घंटे) गाँव के सभी हरिभक्तो द्वार समूह में किये थे। ता. ९-६-१८ के दिन सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में ट्रेन्ट, नाना उफडा, शेर, सीतापुर, पाटडी, माडल, वामणवा, जरवला, कालीयाणा, धाकडी और विरमगाम के हरिभक्तोने धुन का लाभ लिये। जेतलपुर धाम से पू. महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ आकर आशीर्वाद दिये। (प्रभुभाई टी. पटेल - ट्रेन्ट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में रथयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा उनावा मंदिर के नये महंत स्वामी सद्गुणदासजी तथा स.गु. स्वा. अधर्मनाशकदासजी की प्रेरणा - मार्गदर्शन से ता. १४-७-१८ शनिवार को सायं ५-३० से ६-३० तक यहाँ गाँव के सार्वजनिक रास्तो पर परमकृपालु जगन्नाथजी भगवान की रथयात्रा अधिक हर्षोल्लास से निकली थी। जिसके यजमान प.भ. पटेल डाहाभाई मरधाभाई पटेल परिवारने लाभ लिया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने प्रेरणारुप सेवा दिये। अंततः निजमंदिर में ठाकुरजी की संध्या आरती का दर्शन करके सभी लोग मूँग-चना-सींग (मूँगफली) का प्रसाद लेकर खुश हुए। (कोठारीश्री मणीभाई पटेल - उनावा)

जेतलपुरधाम बहनो के मंदिर में कथा पारायण

प.पू.अ.सौ. लभ्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से जेतलपुरधाम का श्री स्वामिनारायण मंदिर ता. ९-६-१८ से ता. १३-६-१८ पर्यन्त पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास में श्रीमद् सत्संगीजीवन पंचन्ह कथा पारयण जेतलपुर रेवती महिला मंडलके यजमान पद पर हुई। कथा वक्ता पद पर सांख्ययोगी नर्मदाबा गु. सां. बचीबा ने सुंदर कथामृत पान संगीत साथ किये थे। कथा में आने वाले उत्सवो, प्राकटोत्सव, गादी पट्टाभिषेक, फुल दोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। जेतलपुरधाम और अगल-बगल की गाँव की बहने कथा का लाभ लेकर अलौकिक प्रसाद ग्रहण करके अधिक खुश हुई। पूरे अधिक मास श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा और पुरुषोत्तम मास की कथा कहकर बहनो को लाभ दिये। (कोठारी स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया में पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज समक्ष भव्य अन्नकूट महोत्सव, कीर्तन भक्ति, कथा वार्ता तथा ठाकुरजी का अभिषेक ता. १३-६-१८ के दिन मनाया गया। ठाकुरजी का छप्पन भोग आरती तथा हरिभक्तो द्वारा मोमबती के द्वारा की गयी। साथ में आतिशबाजी भी हुई थी। शा.स्वा. माधवप्रियादजीने कथावार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये। संतो के सुंदर प्रयास से उत्सव धाम-धूम से मनाया गया। (कोठारीश्री टांकिया मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) ता. १२-६-१८ से ता. १३-६-१८ तक शा.स्वा. माधवप्रियदासजीने पवित्र पुरुषोततम मास में भगवान की लीला कथा करके हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिये। पुरुषोत्तम मास में प्रतिदिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गयी।

(कोठारीश्री डांगरवा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर में ता. २३-६-१८ एकादशी की सुंदर सत्संग सभा की गयी। जिस में यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी और कालुपुर मंदिर के संतोने कथा वार्ता का लाभ दिये। ठाकुरजी समक्ष ता. २४-६-१८ को भव्य पाटोत्सव मनाया गाय।

(कोठारीश्री हिम्मनतगर मंदिर)

ऋषिकेश में कथा पारायण

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर (से-२) द्वारा आयोजित गिरनारी सेवा समिति यजमान पद पर ऋषिकेश में बाबाकाली - कामली आश्रम के सुंदर प्रागणमें ता. १-७-१८ से ता. ७-७-१८ पर्यन्त स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) वक्ता पद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण सम्पन्न हुई। १५०० से अधिक गुजरात के गिरनारी सेवा समिति के भाविक भक्तोने भगीरथी पवित्र गंगा के किनारे कथा श्रवण करके जीवन धन्य बनाये। व्यवस्थापक संतो में कालुपुर मंदिर के कोठारी स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी आदि संत मंडलने अच्छा प्रबन्धकिये थे। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

बळोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री का आगमन

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली देश के स.गु. देवानंद स्वामी के जन्म स्थल बळोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के सिंहासन का जीर्णोध्धार होने पर ता. ३-७-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री बलोल गाँव में आये थे तथा निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारे थे (दोनो मंदिर में) बाद में सभा में सबको आशीर्वाद दिये। इस अवसर पर मूली मंदिर के महंत स्वामी, कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी और कालुपुर मंदिर के संत आये थे। (कोठारीश्री - बलोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (सीतापुर) धांगधा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से धांगधा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुजारी नारायणदास स्वामी और सभी हरिभक्तोने जेठ सुद-१० को श्रीहरि के अंतर्ध्यान तिथि पर धून-भजन, कीर्तन और कथा वार्ता किये थे। उसी प्रकार नवनिर्मित बहनो के मंदिर में सां. कंचनबा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से मंदिर में चनबा आदि बाईयोने कथा पूजन की इसी प्रकार एकादशी के पवित्र दिन पर भजन-कीर्तन और धून सांख्ययोगी बहनो द्वारा किया गया था। ता. ९-७-१८ के दिन नरसीपरा विस्तार में गीताबेन राजूभाई के यहाँ सां. कंचनबा, हिराबा और भगवतीबा कथा

वार्ता का लाभ दी । इस प्रकार प्रत्येक एकादशी को अलग-अलग विस्तार में कथा की जाती है।

१५४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीतादरवाजा) का १५४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २०-७-१८ के दिन मनाया गया । हमारे आदि आचार्य प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराजने इस मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा किये थे । इस पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण मूली के शा. स्वा. धर्मजीवनदासजी वक्ता पद पर थे । ध्रांगध्रा शहर के की हरिभक्तोने दर्शन और वार्ता का लाभ लिये।

पाटोत्सव के यजमान सां. भगवतीबेन थी । समस्त प्रसंग पू. स्वामी भक्तिहरि स्वामी की प्रेरणा से मनाया गया। सभा का संचालन विश्वनंदनदासजीने किया । यहाँ के मंदिर के पूजारी स्वामी नारायणदासजीने पाटोत्सव का सुन्दर आयोजन किये थे । ध्रांगध्रा और आस-पास के हरिभक्तोने कथा-वार्ता का लाभ उठाये । तथा धन्यता अनुभव किये।

(प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (ता. हलवद)

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू.शा. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से ता. ८-७-१८ के दिन ८५ वाँ सत्संग सभा सम्पन्न हुई । जिस में हलवद, मोरबी और ध्रांगध्रा से संत एवम् सांख्ययोगी बहने और हरिभक्तो में पू. भक्तिहरि स्वामी वक्तापद पर भगवान श्रीहरि, धर्मकुल का माहात्म्य और शिक्षापत्री के प्रमाण में अपना जीवन जीये ऐसा उपदेश दिये । हरिभक्त खुस हुए । सभा संचालन विश्वनंदन स्वामीने सुंदर रुप से किये । हरिभक्त दर्शन करके खुश हुए । और प्रसाद ग्रहण करके आन्नदित हुए।

(अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लिंबडी (बाहेलापरा)

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी (पुरमा) बाहेलापरा में बहनो का मंदिर की पूजारी सांख्ययोगी चंद्रिकाबा गुरु कोकिलाबा के शुभ संकल्प से यहाँ के भूदेवो की ब्रह्मचोरासी ब्रह्म भोजन तपोधनधाम जगन्नाथ आश्रम में रखी गई थी । इस अवसर पर हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ आये थे और प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये। अहमदाबाद, नारणघाट, मूली, प्रांतिज, उनावा चराडवा, मोरबी, मकनसर आदि धामो से संत आये थे । सुरेन्द्रनगर मंदिर से सांख्ययोगी कोकिलाबा, कमलाबा, उषाबा आई थी।

हजारो हरिभक्तोने देव दर्शन, धर्मकुल दर्शन करके धन्यता को अनुभव किये। (नरेन्द्रभाई सोनी - लींबडी)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (अमेरिका)

राजोपचार विधि

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से उसी प्रकार यहां के मंदिर के महंत स्वा. नारनारायणदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में सर्वप्रथम राजोपचार वेदोक्त विधिसे स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने किया था । पालखी यात्रा विहोकन के सार्वजनिक मार्गो पर संत-हरिभक्तो का विशाल समूह भजन-कीर्तन के साथ निकली थी । जिसके मुख्य यजमान पटेल घनश्यामभाई और सहयजमान अरविंदभाई पटेल डांगरवा वाले थे । यहाँ के मंदिर में आम्रोत्सव धामधूम से मनाया गाय । रथयात्रा सुंदर रुप से मनाई गइ थी । मंदिर के अगल-बगल रथ में हरिकृष्ण महाराज को धुमाया गया तथा कीर्तन धुन करते हरिभक्तोने रथ को धुमाया । स्वामीजी उपरोक्त उत्सव की महिमा समझाये थे। (बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया (अमेरिका)

१३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़डे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में १४ वाँ पाटोत्सव

८ से १४ जुलाई की बीच भव्यता के साथ मनाया गया।

इस अवसर के उपलक्ष में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी वक्ता पद पर श्री नरनारायणदेव माहात्म्य कथा रविवार से शुक्रवार शाम तक हुई । इस अवसर पर पोथीयात्रा उत्साहपूर्वक निकाली गयी । विशाल संख्या में कथा प्रेमी हरिभक्तोने श्री नरनारायणदेव का अलौकिक महात्म का श्रवण करके धन्य हुए । ४ जुलाई को प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक और इसके बाद आरती की गई । छप्पन भोग अन्नकूट आरती भी लालजी महाराजश्रीने उतारी थी । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन और आरती किये तथा आशीर्वाद प्राप्त किये। संत-पार्षदो का भी पूजन किया गया। कथा की पूर्णाहुति की आरती और महापूजा की आरती प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया। सभी छोटे-बड़े सेवा देनेवाले हरिभक्तो का प.पू. लालजी महाराजश्रीने कर कमलो द्वारा सन्मान किया गया । प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हृदयपूर्वक आशीर्वाद दिये। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (ह्यूस्टन) अमेरिका

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठचरणदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन में ३० जून शनिवार को शायं काल ठाकुरजी को आम का अन्नकूट रखा गया। इस अवसर पर बायरन, एटलांटा और ज्योर्जिया से अपने संत-पार्षदो आये थे। महंत स्वामी श्रीहरि को किये गये आम्र उत्सव की सुंदर कथा कही। यजमानो का सन्मान और मेहमानो का सन्मान किया गया । अंत में जनमंगल पाठ, थाल शयन आरती की श्री हनुमानजी की आरती की गयी। सभी भक्तदर्शन करके धन्य हुए। (प्रविण शाह)

छपैयाधाम पारसीप (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी धर्मविहारीदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीप में अषाढ सुद-२ रथयात्रा के शुभ दिन को नौजवानो ने रथ में विराजित करके आरती किये मंदिर के परिसर में भजन-कीर्तन करके हाल में रखे । संतो ने रथयात्रा का महात्म्य समझाया। सभी छोटे-बड़े यजमानो का सन्मान किया गया। बालको एवम् युवाओ की सुंदर प्रवृत्ति का वखान किया गया। (प्रवीण शाह)

वडतालधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर - एलनटाउन की तासरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पार्षद श्री नरेन्द्र भगत की प्रेरणा से वडतालदाम श्री स्वामिनारायण मंदिर - एलनटाउन के तीसरे पाटोत्सव को उत्साह पूर्वक मनाये । इस अवसर पर स.गु. गोपालानंद स्वामी के द्वारा पंचदिनात्मक पारायण शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी के वक्तापद पर से हुई।

इस अवसर पर प.पू. १०८ भविष्य के आचार्यश्री लालजी महाराजश्री भी आये थे और आशीर्वाद दिये । सेवक हरि भक्तोका सन्मान प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा किया गया।

आई.एस.एस.ओ. हमारे मंदिरो में से आये संतोने श्रीहरि की सर्वोपरी महिमा की बात उदाहरण सहित बताये। बच्चो द्वारा श्रीहरि के उत्सवो युक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम किये।

अन्तिम दिन वडतालधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वरुपो की अन्नकूट आरती का दर्शन करके हरिभक्तोने लाभ लिया। (अरविंदभाई पटेल - गामडीवाला)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में १६ वाँ पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करते यजमान तथा ठाकुरजी का दर्शन ।(२) बाल्टीमोर (अमेरिका) के मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।
(३) एलेनटाउन (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का दर्शन । (४) विहोकन (अमेरिका) मंदिर में रथयात्रा दर्शन ।
(५) ऋषिकेश में गांधीनगर से-२ के मंदिर द्वारा कथा पारायण करते वक्ताश्री और संत ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के ससुर श्री उमाकान्तजी तिवारीजी का अक्षरवास

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ससुर और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के पूज्य पिताश्री श्रीयुत उमाकान्तजी तिवारीजी साहब (उम्र-६६ वर्ष) ता. ५-७-१८ जेठ वद-७ गुरुवार के दिन अपने निवास स्थान लखनऊ (यु.पी.) में परम कृपालु परमात्मा का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है । ऐसे दुःख भरे समाचार से समस्त धर्मकुल परिवार और श्री नरनारायणदेव के समस्त सत्संगीयो को अधिक दुःख हुआ है । परमकृपालु श्रीहरि उनके परिवार को अधिक धैर्य और बल दे । ऐसी श्रीहरि के चरणो में प्रार्थना ।

- महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर
कालुपुर, अहमदाबाद

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) अहमदाबाद मंदिर में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ठाकरुजी का श्रृंगार आरती करते हुए श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप ।(२) क्लिवलैंड मंदिर के १० वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री और दर्शन का लाभ लेते हरिभक्त ।(३) पेन्सिलवेनिया (अमेरिका) में सत्संग युवा कैम्प में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Follow Us On

Praful Kharsani